

अक्षर

जुलाई-2020

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका



नालको  **NALCO**

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक 'नवरत्न' लोक उद्यम)
निगम एवं पंजीकृत कार्यालय
पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013





दामनजोड़ी आगमन के दौरान पंचपटमाली बॉक्साइट खान में क्रशर एवं
ओवरलोड कन्वेयर का शिलान्यास करते हुए माननीय खान मंत्री श्री प्रह्लाद जोशी



नालको द्वारा प्रायोजित नवरंगपुर, ओडिशा स्थित कोविड अस्पताल का उद्घाटन करते हुए माननीय
खान मंत्री श्री प्रह्लाद जोशी तथा माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक



प्रख्यात अभिनेता श्री अनिल कपूर से "टाइम्स बिजनेस अवार्ड - सीईसआर तथा वातावरण अनुशीलन हेतु
सर्वोत्तम पीएसयू" का पुरस्कार ग्रहण करते हुए हमारे अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय श्री श्रीधर पात्र

अक्षर

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका
जुलाई-2020



मुख्य संरक्षक

श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री व्ही. बालसुब्रमण्यम, निदेशक (उत्पादन)

श्री संजीव कुमार राय, निदेशक (परियोजना एवं तकनीकी)

श्री प्रदीप कुमार मिश्र, निदेशक (वाणिज्य)

श्री राधाश्याम महापात्र, निदेशक (मानव संसाधन)

श्री सोमनाथ हंसदां, मुख्य सतर्कता अधिकारी

सलाहकार

श्री अशोक कुमार मूर्ति, कार्यपालक निदेशक (ओ.आ. व अ, सू. का अ, एवं सं.का.)

श्री जावेद रेयाज़, महाप्रबंधक (ओ.आ. एवं अनुपालन)

संपादक

श्री रोशन पाण्डेय, सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सह-संपादक

श्री हिमांशु राय, कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

श्री पवन कुमार त्रिपाठी, कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), अनुगुल

डॉ. धीरज कुमार मिश्र, कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), दामनजोड़ी

नालको  NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड

(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक नवरत्न लोक उद्यम)

निगम एवं पंजीकृत कार्यालय

पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013

वेबसाइट : <http://www.nalcoindia.com>

ईमेल: javed.reyaz@nalcoindia.co.in

सीमित वितरण हेतु

पत्रिका में छपने वाले विचार
लेखक/कवि के निजी हैं, इनसे संस्था
या संपादक का सहमत होना
आवश्यक नहीं।

विषय-सूची

निगमित नागरिकता एवं हितधारकों की संलिप्तता	भागवतुला रमेश	06
मेरे सपने !	करुणेश कुमार	08
कोविड -19 की लड़ाई में अनुवाद की भूमिका	रोशन पाण्डेय	09
पॉजिटिव थिंकिंग	सदाशिव सामन्तराय	11
कोरोना के साथ कैसे जिएंगे हम	बनाली अधिकारी	15
धर्म बनाम इंसानियत	शगुफ्ता जबीं	17
यह ज़िन्दगी अधूरी !	साक्षी स्मृति	18
सौर ऊर्जा के माध्यम से दूरस्थ गाँवों को रोशनी	निगम सामाजिक उत्तरदायित्व	19
रफ कॉपी	अश्विनी सूतार	22
कुछ पाने की चाह में...	पूजा प्रियदर्शिनी नायक	22
नया 'सामान्य'	संपदा पती	23
नौ बजे नौ मिनटः ब्लैक आउट	अखिल कुमार	24
कोरोना	श्लेषा शंकर	25
दृष्टिकोण	बि. सुजया लक्ष्मी	26
प्रतिरोधक क्षमता (इप्पून सिस्टम)	रजनीश कुमार गुप्ता	27
सीख	स्वाती तिवारी	28
दिसंबर 1992 की काली रातें	चिरंतन श्याम	29
जानवर बेजुबान नहीं बदजुबान इंसान है !	गिताञ्जली रथ	30
देखो शुरू हो गई रेल	संगीता प्रसाद	31
वक्त	आयशा अहद	31
कोविड -19 (कोरोना वायरस दिसंबर -2019)	अनुराधा पटनायक	32
क्या है करोना?	सना फ़रीद	32
'सेल्फ मोटिवेशन' ही सर्वोत्तम 'मोटिवेशन' है	विनय ठाकुर	33
स्वच्छता की मिसाल : मावल्यान्नाँग	मेधा श्रुति	35
कोरोना के प्रभाव	अंजना मुंडू	36
बीच में रुकना नहीं है	सुनील पती	37
पहली तस्वीर	मौसमी साहू	38
प्रश्न चिह्न	शुभ्रा सिन्हा	39
धुस्का	वीणा कुमारी	40
सहजन रस (सञ्जी)	वी. अनुराधा	40



अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

जीवन संभावनाओं का केंद्र है। संभावनाएँ ही जीवन को संचालित करती हैं। इस संचालन में प्राप्त होने वाला अनुभव और इस संचालन के लिए किया गया प्रयास हमारे जीवन की दिशा और दशा तय करते हैं।

पिछले कुछ समय की स्थितियों से यकीन व्यक्ति से लेकर विश्व तक प्रभावित हुआ है। यह प्रभाव आने वाले दिनों तक देखा जा सकेगा। इस स्थिति विशेष में जरूरी है कि, हम अपनी आदतों, अपने नज़रिए और अपने भावी योजना को जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार समझें और अपने लिए, अपने-अपनों के लिए, अपने संस्थान और देश के लिए अपनी भूमिका अदा करें।

अक्षर के जुलाई - 2020 अंक के माध्यम से हमें पुनः एक दूसरे से जुड़ने, एक दूसरे को जोड़ने का अच्छा अवसर प्राप्त हो रहा है। यह एक मंच है जहाँ से हम अपनी बात, अपनी कंपनी में और कंपनी के बाहर भी पहुँचा सकते हैं। यह एक अवसर है, अपने मन-अपने विचार से दूसरों को परिचित करवानेका। जहाँ हमें कुछ अच्छा, कुछ नया, कुछ सीखने-पढ़ने और जानने को मिलता है।

हम सभी यह जानते हैं कि, देश की अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सारे आर्थिक उपार्जन मंदी के दौर से गुजर रहे हैं। इस संकट के समय में अपने देश, परिवार, समाज और संस्थान के प्रति हमारा दायित्व अधिक बढ़ जाता है। यह ऐसी ही स्थिति है, जैसे हमारे परिवार में किसी की तबीयत बिगड़ती है, तो हम उनका और अधिक ध्यान रखने लगते हैं, उनकी अधिक परवाह करने लगते हैं। वैसे ही, इस स्थिति में हमें अपनी कंपनी, अपने देश, अपने समाज, अपने परिवार की अधिक परवाह करने की जरूरत है। नालको हमेशा से इस प्रयास में आगे रहा है, इस महामारी के दौर में भी विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से जैसे- अस्पताल निर्माण, दामनजोड़ी-अनुगुल के समीपवर्ती इलाकों का नियमित सेनेटाइजेशन, चिकित्सक, पुलिसकर्मी, सफाई-कर्मी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नालको परिवार ने अपने समर्पण को प्रस्तुत किया है।

इतिहास गवाह है, इससे पहले भी हमने कई विषम स्थितियों में जीत हासिल की है और एक नई ऊँचाई को प्राप्त किया है। इस बार फिर हम अपने सामूहिक प्रयास, ईमानदार चेष्टा और पूर्ण समर्पण से एक नई जीत हासिल करेंगे-यह तय है। आवश्यकता है एक दूसरे पर और खुद पर विश्वास रखने की, क्योंकि - "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"। जब तक मन नहीं हारता, जीत मुमकिन रहती है। आइए, इस जीत की कोशिश को सफल करें।

मैं "अक्षर" के वर्तमान अंक के साथ एक विश्वास, एक भरोसा, एक यकीन भी व्यक्त करता हूँ कि, "हम छूँगे आसमान....."

आप सभी को,

आने वाले एवं बीते पर्वों की शुभकामनाएँ.....

श्रीधर पात्र
(श्रीधर पात्र)

राधाश्याम महापात्र
निदेशक (मासं)
Radhashyam Mahapatro
Director (HR)



प्रिय पाठकों,

हमारी गृह पत्रिका 'अक्षर' का यह अंक आपके समक्ष रखते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। बीते कुछ माह में नालको के साथ-साथ पूरा देश, पूरा विश्व कोरोना महामारी से लड़ रहा है। जिससे आमजन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता निष्ठित ही बढ़ी है। 'सोशल दूरी' से 'सोशल निकटता' बढ़ी है। हम अपने आसपास के लोगों से ज्यादा रूबरू हो पाए हैं, अपने परिवार जनों के साथ अमिट स्मृतियों को संचित करने में कामयाब हो पाए हैं। अपनी छिपी प्रतिभाओं को ज्यादा आयाम प्रदान कर सकने में सक्षम हो पाए हैं। इसके साथ ही साथ नालकोनियन होने के नाते हम इस कठिन परिस्थिति में भी 24 घंटे अपने संयंत्र के संचालन से कोरोना योद्धा के रूप में देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देने में भी सक्रिय रहे हैं। हमने अपने बल, सामर्थ्य, कौशल, प्रतिभा, क्षमता से निष्ठित ही कोरोना महामारी की हराने में अपने देशवासियों के साथ कंधे से कंधा मिलाया है। इस कड़ी में नबरंगपुर में कोविड-19 अस्पताल का निर्माण तथा अनुग्रह और दामनजोड़ी ज़िले में नियमित तौर पर आसपास के इलाकों में सैनिटाइजेशन का कार्य विशेष उल्लेखनीय है। इस अवसर पर मैं अपने चिकित्सकों, सफाईकर्मियों, सुरक्षाकर्मियों सहित पूरे नालको परिवार की सराहना करना चाहूँगा, जिनसे हमें इस चुनौतीपूर्ण समय में गौरवान्वित होने के क्षण प्राप्त हुए।

हमने सामाजिक दूरी का पालन करते हुए विभिन्न अवसरों यथा – विश्व योग दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, अपने सहकर्मियों की सेवानिवृत्ति जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को भी मनाया। हमने अपनी निष्पुणता, अपने विश्वास का परिचय देते हुए 'महाप्रभु जगत्राय' की रथयात्रा को भी पूरे जोश व श्रद्धाभाव रखते हुए प्रभु की सेवा में स्वर्य को प्रस्तुत किया तथा साथ ही भारत सरकार के आदेशों का अनुपालन भी किया। मैं अपने इस संदेश के साथ आप सभी से आग्रह करूँगा कि जिस प्रकार हमने अपने दायित्वों का निर्वहन करने में पूरी जिम्मेदारी का परिचय दिया है, आने वाले कुछ माह या वर्ष पर्यंत स्वयं के तथा परिवार व साथी कर्मियों के स्वास्थ्य की देखभाल करें तथा इस कठिन परिस्थिति से मिलकर लड़ें, हम अवश्य ही विजयी होंगे।

अंत में इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, रचनाकारों तथा सभी नालको परिवार का आभार, व आगामी अंक हेतु शुभेच्छा,

आपका,

०८/०८/२१
(राधाश्याम महापात्र)
निदेशक (मानव संसाधन)

नेशनल एल्यूमिनियम कम्पनी लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
नियम आर्थिक
नालको भवन, गो-१, नयापली, भुबनेश्वर-७५१ ०१३, भारत

फोन: ०६७४-२३००४३० (O), फैक्स FAX: ०६७४-२३०१७५१, ई-मेल: dhr@nalcoindia.co.in, radhashyam.mahapatro@nalcoindia.co.in
सेट: ०६७३०३८१९८। GIC/000920

National Aluminium Company Limited

(A Government of India Enterprise)

CORPORATE OFFICE

NALCO BHAVAN, P.H. Nayapalli, Bhubaneswar-751 013, India

दर्द के एहसास में कभी कोई फर्क नहीं किया जा सकता, दर्द के कारण अलग-अलग हो सकते हैं पर किसी भी व्यक्ति के लिए दर्द-तकलीफ तो दर्द और तकलीफ ही होती है। पूरा संसार इस बिंदु पर भी एक ही स्तर पर जीता है।

आज की भयावह स्थिति में जब पूरी मानव जाति एक महामारी से जूझ रही है किसी के लिए भी इस मुद्दे को अपने संप्रेषण में शामिल न करना मुमकिन नहीं है। मुमकिन यह भी नहीं है कि, हम सभी अपने घरों में बंद हो जाएं। हाँ, पर यह जरूर मुमकिन है कि, इससे भयभीत न होकर, इसके साथ रहने के विकल्प तलाशे जाएँ क्योंकि, - “जीवन क्या है, निर्झर है, मर्स्ती ही इसका पानी है, सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रही राह मनमानी है।” ऐसे जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती जिसमें सब अच्छा हो, सब सुखद हो। पर यह कोशिश जरूर की जा सकती है कि, सब अच्छा हो, सब सुखद हो।

नालको भी इसी सिद्धांत को अपनाकर आगे बढ़ रहा है, आगे बढ़ता जा रहा है। पिछले कुछ महीनों के संदर्भ में अपने परिचालन स्थान के आस-पास के इलाकों की सफाई, चिकित्सा की व्यवस्था, खाने-पीने व दूसरी जरूरत की वस्तुओं के वितरण के बारे में कई समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया भी है। नालको के सामान्य लोगों के असामान्य नज़रिए के कुछ नमूने पत्रिका के विभिन्न लेखों में भी प्रस्तुत हुए हैं, कार्पोरेट जगत, व्यक्तित्व, सामाजिक उत्थान, तकनीकी, प्रेरणा-प्रद कहानियों से लेकर व्यक्ति के लिए इस पल की आवश्यक बातों के साथ ही रसोई तक का ज़ायका आपके मन-बुद्धि और स्वाद तक को संतुष्ट करने वाला है।

इस महामारी के समय में इस अंक का समय से प्रकाशन अपने आप में एक चुनौती रही परंतु प्रबंधन, रचनाकारों और निगम संचार व जन संपर्क विभाग के सामूहिक सहयोग व मार्ग दर्शन से इस चुनौती को सहजता और सफलता से पार कर लिया गया। इस अंक के प्रकाशन में अपना सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का हृदय से आभार, ‘निगमित नागरिकता’ के विश्लेषण को समर्पित इस अंक में सतरंगी अभिव्यक्ति से जीवन के विभिन्न रंग खुलेंगे और जीवन सकारात्मकता व सुरक्षा का आयाम बनेगा।

इस अंक को आपको सौंपते हुए संतोष है कि, आज के समय की आवश्यकता को पूरा करने की ईमानदार कोशिश की गई है। शेष अगले अंक में,

धन्यवाद !



(रोशन पाण्डेय)
संपादक



निगमित नागरिकता एवं हितधारकों की संलिप्तता

भागवतुला रमेश

प्रस्तावना

विश्व-भर में व्यावसायिक उद्यम अपनी कंपनियों के लिए निगमित नागरिकता को एक प्रमुख प्राथमिकता बना रहे हैं। कुछ नीतियों को अद्यतन कर रहे हैं और कार्यक्रमों को संशोधित कर रहे हैं; अन्य नागरिकता संचालन समितियों का गठन कर रहे हैं एवं अपने पर्यावरण और सामाजिक प्रदर्शन का आकलन कर, सार्वजनिक रिपोर्ट जारी कर रहे हैं। यह एक बढ़ती मान्यता है कि जहाँ निगमित-सामाजिक व आर्थिक मूल्यों को बेहतर बनाने में कंपनियाँ और हितधारक अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देते हैं, स्वैच्छिक सहयोग से वहाँ आर्थिक मूल्यों की सर्वोत्तम वृद्धि होती है। यह सही कहा गया है कि निर्णय प्रक्रिया, समझ और जवाबदेही में सुधार कर "हितधारक जुड़ाव" से दीर्घकालिक व्यवहार्यता और लाभ में सुधार किया जा सकता है। कई कंपनियों के पास संगठन के स्थायी विकास के व्यापक उद्देश्यों और हितधारक नियुक्ति प्रबंधन हेतु व्यवस्थित प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए एक हितधारक नियुक्ति योजना है। निगमों की बढ़ती सामाजिक भागीदारी उनके परोपकार और निगम सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रमों के माध्यम से समाज कल्याण पर सरकार के खर्च को पूरा करती है।

निगमित नागरिकता - व्यापार में एक नई शब्दावली - समाज से संबंध

"निगमित नागरिकता" अवधारणा एक प्रकार की कंपनी की ओर इशारा करती है जो समाज की भलाई (व्यापक अर्थ में) को, अपनी भलाई के रूप में ही स्वीकारती है। निगमित नागरिकता कंपनी के लक्ष्यों को एकीकृत कर, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर भी हितधारकों के हितों के सापेक्ष नेतृत्व प्रदान करती है। निगमित नागरिकता का मुख्य उद्देश्य संगठन में वित्तीय सहायता, कर्मचारियों के उपयोगिता और कर्मचारियों की भागीदारी का लाभ उठाने के लिए सर्वोत्तम रणनीतियों का निर्धारण करना है। आज कई कंपनियाँ निगमित नागरिकता का प्रचार समाज के हित के लिए

करती हैं। इसके साथ ही ग्राहक और निवेशक, कंपनी के पर्यावरण, सामाजिक और शासन प्रथाओं पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। निगमित नागरिकता नीति हितधारकों के साथ जुड़ाव प्रदान करती है, जो सतत रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हितधारकों के जुड़ाव में सुधार से उत्पादकता, लाभ और स्थिरता बढ़ जाती है।



निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (नि.सा.उ.) और निगमित नागरिकता की अवधारणाओं को प्रायः एक दूसरे के साथ इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि, निगम सामाजिक उत्तरदायित्व निगमित नागरिकता की एक अवधारणा है, जो कंपनी और क्षेत्र के आधार पर विभिन्न रूप ले सकती है। कंपनियों के पास कई हितधारक होते हैं और उनकी अपेक्षाओं को समझना संगठन के जोखिम और प्रतिष्ठा के प्रबंधन के लिए भी महत्वपूर्ण है। कंपनी का प्रोफ़ाइल जितना अधिक होगा, उसकी गतिविधियों की जांच उतनी ही अधिक होगी और समाज पर प्रभाव की क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी। चित्र में विभिन्न निगम हितधारियों का विवरण दिया गया है।

निगमित नागरिकता का विकास

निगमित नागरिकता के पांच चरणों को परिभाषित किया गया है:

1. प्रारंभिक,
2. संलिप्त,
3. नवोन्मेषी,
4. एकीकृत,
5. रूपांतर



प्रारंभिक चरण में, एक कंपनी की नागरिकता गतिविधियाँ बुनियादी और अपरिभाषित होती हैं क्योंकि इसमें निगम जागरूकता कम होती है और नगण्य वरिष्ठ प्रबंधन शामिल होते हैं। छोटे व्यवसाय, विशेष रूप से, इस चरण में शामिल हैं। वे मानक स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरण कानूनों का पालन करने में सक्षम हैं, लेकिन उनके पास इस सामुदायिक विकास को पूरी तरह से विकसित करने के लिए समय या संसाधन नहीं होते हैं।

संलिप्तता के चरण में, शीर्ष प्रबंधन प्रायः समाज की बढ़ती अपेक्षाओं पर खरा उतरते हैं और कंपनी की भूमिका और जिम्मेदारियों पर एक नया दृष्टिकोण अपनाने लगते हैं। कंपनियाँ प्रायः ऐसी नीतियों का विकास करती हैं जो कर्मचारियों और प्रबंधकों की गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ावा देती हैं जो बुनियादी कानूनों के लिए अल्पविकसित अनुपालन से अधिक हैं।

नवोन्मेषी चरण में नागरिकता नीतियाँ अधिक व्यापक हो जाती हैं, शेयरधारकों के साथ बैठकों और परामर्शों के माध्यम से तथा फ़ोरम व अन्य आउटलेट्स में भागीदारी के माध्यम से नवोन्मेष निगमित नागरिकता नीतियों को बढ़ावा दिया जाता है। विकास के इस चरण के दौरान, एक कंपनी दो तरीकों से आगे बढ़ती है: (क) नागरिकता की एक अधिक व्यापक अवधारणा को गले लगाकर अपने एजेंडे को व्यापक बनाना और (ख) एक शीर्ष नेता के रूप में अपनी भागीदारी को गहरा करना और एक स्टूवर्डशिप भूमिका को अधिक मानना। नवाचार और सीखने के उच्च स्तर इस चरण को चिह्नित करते हैं।

एकीकृत चरण में, नागरिकता गतिविधियों को औपचारिक रूप दिया जाता है और कंपनी के नियमित परिचालन के साथ मिलाया जाता है। सामुदायिक गतिविधियों में प्रदर्शन की निगरानी की जाती है, और इन गतिविधियों को व्यवसाय

की रेखाओं में संचालित किया जाता है। इनमें जोखिम प्रबंधन प्रणाली, हितधारक परामर्श योजनाएं, प्रबंधकों और कर्मचारियों के लिए स्थिरता प्रशिक्षण, प्रबंधन ढांचे जैसे मुद्रे शामिल हैं।

एक बार जब कंपनियाँ रूपांतरण चरण में पहुंच जाती हैं, तो वे समझती हैं कि निगम नागरिकता बिक्री में वृद्धि और नए बाजारों के विस्तार में एक रणनीतिक भूमिका निभाती है। आर्थिक और सामाजिक भागीदारी इस चरण में कंपनी के दैनिक कार्यों का एक नियमित हिस्सा है। संगठन अन्य व्यवसायों, सामुदायिक समूहों और गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम करते हैं ताकि समस्याओं से निपट सकें, नए बाजारों तक पहुंच सकें और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का विकास कर सकें।

हितधारकों की संलिप्तता

हितधारकों को "उन समूहों और व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो संगठन के उद्देश्य की उपलब्धि से प्रभावित होते हैं, या प्रभावित हो सकते हैं" (फ्रीमैन, 1984)। कुछ अन्य का मानना है कि हितधारकों के संगठनों पर वैध दावे हैं और निगम गतिविधियों से वित्तीय या मानवीय जोखिमों के लिए अतिसंवेदनशील हैं और / या संगठनात्मक निर्णय लेने या गतिविधि को प्रभावित कर सकते हैं। हितधारक या तो आंतरिक जैसे- "कर्मचारी, जिनमें कार्यकारी अधिकारी, अन्य प्रबंधन और बोर्ड के सदस्य" या बाहरी जैसे- "ग्राहक, आपूर्तिकर्ता, सरकार, यूनियन, स्थानीय समुदाय और आम जनता" हो सकते हैं। हितधारक समूहों के कुछ उदाहरण नीचे दिये गए हैं:

- वित्तीय संस्थान: शेयरधारक, विश्लेषक, बैंक आदि।
- सरकार: विधायिका, बहुपक्षीय एजेन्सियाँ, नियामक, स्थानीय सरकार आदि।
- हित समूह: व्यापार संघ, गैर सरकारी संगठन आदि।
- व्यवसाय: ग्राहक, उपभोक्ता, प्रतिद्वंदी, आपूर्तिकर्ता, कर्मचारी, यूनियन आदि।

दूसरी ओर, संलिप्तता आपसी हित के मुद्रों पर समझ और विश्वास के निर्माण के उद्देश्य से हितधारकों से जानकारी सुनने, सीखने और सीखाने की प्रक्रिया है। यह समय के साथ समाज में निगमों की भूमिका के रूप में विकसित हुआ है। हितधारकों के सम्मिलित होने के तीन चरण हैं यानी पहला चरण हितधारक संलिप्तता प्रतिक्रियात्मक था, दूसरा चरण जोखिम और प्रतिष्ठा प्रबंधन का एक व्यवस्थित हिस्सा बन गया है, वहीं तीसरा चरण अभी शुरू हो रहा है और इसके

तेजी से क्रियाशील होने की संभावना है। प्रत्येक संगठन को नवाचार और नए उत्पादों और बाजारों के सह निर्माण के माध्यम से अपनी प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए मूल्य श्रृंखला के ऊपर और नीचे के हिस्सेदारों की संलिप्तता बढ़ानी है।

संलिप्तता का औचित्य

निगमित हितधारकों की संलिप्तता का मुख्य उद्देश्य प्रमुख मुद्दों पर हितधारक दृष्टिकोण की बेहतर समझ उत्पन्न करना है और इसके परिणामस्वरूप प्रमुख व्यक्तियों के साथ संबंध बनाना है। यह देखा गया है कि रिश्तों से अधिक मूल्य का एहसास किया जा सकता है। यह एक व्यावसायिक दृष्टिकोण है जो आर्थिक, पर्यावरण संबंधी और सामाजिक विकासों से मिलने वाले अवसरों को प्राप्त करते हुए और जोखिमों का प्रबंधन करके दीर्घकालिक शेयरधारकों का मूल्य बनाता है। चार मुख्य क्षेत्र हैं जहां हितधारक सम्मिलित होते हैं। प्रथम यह व्यावसायिक समझ बढ़ाने और जोखिमों को कम करके सूचना परक निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। दूसरे, यह उन बाजारों या अवसरों का विकास और विस्तार भी करता है जो स्वामित्व को बढ़ावा देते हैं। तीसरा, यह ब्रांड इकिटी और प्रतिष्ठा भी बनाता है। चौथा, यह रचनात्मकता और नवीनता के लिए विविध दृष्टिकोण भी लाता है।

निगमित नागरिकता का भविष्य

व्यावसायिक स्थिरता के लिए निगमित नागरिकता लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। यह मूर्त (i) जैसे कि अपव्यय को कम करना और ऊर्जा दक्षता बढ़ाना एवं अमूर्त (ii) जैसे कि कर्मचारी उत्पादकता को बढ़ाना, दोनों का लाभ प्रदान करते हैं। भविष्य में इसका संबंध किसी उद्यम में नागरिकता का निरंतर विकास, फर्म की राष्ट्रीय उत्पत्ति, उद्योग, आकार, रणनीति और प्रतिस्पर्धा से हो सकता है। निगमित नागरिकता स्वीकारने वाली कंपनियाँ अपने जोखिम को कम करने के साथ निष्ठा और नवाचार को प्रोत्साहित करते हुए अपनी प्रतिष्ठा और परिचालन दक्षता में सुधार कर सकती हैं। कुल मिलाकर, उन्हें एक अच्छे निवेश और निवेशकों, कर्मचारियों, ग्राहकों, नियामकों और संयुक्त उद्यम भागीदारों द्वारा पसंदीदा कंपनी के रूप में देखा जा सकता है। यह भविष्य की पीढ़ियों और संगठन के भविष्य के लिए एक हरित एवं स्वस्य भू-मंडल के निर्माण की इच्छा व तर्क का पोषण करते हैं।

प्रबंधक (परियोजना)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



मेरे सपने !

करुणेश कुमार

नील शैल के चरण कमल में
शीश धरे हों मेरे।
उत्कल जननी की पवित्र धरा पर
पाँव जमें हों मेरे॥

मन की निष्ठा, तन की ऊर्जा,
सब संचित हो मेरे।
मन का निश्चय धूमिल ना पड़े,
अविचल मन में मेरे॥

जो भी हम योजना बनाएँ
पर्यावरण पूरक हों।
जनमन की सम्मति हो उसमें,
ना दुविधा मन में मेरे॥

'नालको' बने 'महारत',
सब-उत्कल-जन उपकृत हों।
उत्कल जननी बने शिरोमणि
यही सपने हैं मेरे॥

सहायक महाप्रबन्धक (व्यापार विकास)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



कोविड-19 की लड़ाई में अनुवाद की भूमिका

रोशन पाण्डेय

शीर्षक में दो पदों पर नज़र रुकती है- कोविड-19 और अनुवाद!

कोविड-19 का पहला मामला भारत में 30 जनवरी 2020 को चिह्नित किया जाता है। जबकि, विश्व इस महामारी से उससे पहले ही परिचित भी हो चुका था और पीड़ित भी। बहरहाल, इतना तो तय माना जा रहा है कि, इस मामले(महामारी) की देन चीन से हुई। चीन से होते हुए मामला विश्व में फैला और इस महामारी के साथ विकसित हुई, फैली एक नई शब्द संरचना।

महामारी अपने साथ अपने शब्द, अपने अभिप्राय, अपने अर्थ और अपनी अभिव्यक्ति लेकर आगे बढ़ती रही। इस क्रम में महामारी के साथ शब्दकोश में नए शब्द भी जुड़े और पुराने परिचित शब्दों के नए अर्थ भी गढ़े गए। शब्द का अर्थ उसके स्वरूप से कहीं अधिक उसके प्रयोग से प्रेरित और प्रभावित होने लगा। इस महामारी द्वारा गढ़े गए शब्दों में अतिपरिचित हुए शब्दों की श्रृंखला पर नज़र डालें तो- सोशल डिस्टेन्सिंग, कोरन्टाइन, लॉक डाउन, कम्यूनिटी स्प्रैड, कॉन्टेक्ट ट्रेसिंग, सूपर स्प्रैडर, इंडेक्स पेशेट, सेल्फ कारन्टाइन, कोविड - 19, पीपीई, सेल्फ आईसोलेशन, सोशल आईसोलेशन, हर्ड इम्यूनिटी, सैनेटाइज़ेशन, कोबिडियट आदि आदि। इन शब्दों के अस्तित्व पर कोई सवाल भले न सही, पर इन शब्दों के प्रयोग और अर्थ संदर्भ पर जिज्ञासा स्वाभाविक ही उत्पन्न होती है। बतौर एक शब्द देखिए, आइसोलेशन - पृथक्वास अथवा अलगाव, शब्द अमूमन नकारात्मक संदर्भ में प्रयुक्त रहा है लेकिन इस कोरोनाकाल ने नहीं शब्द का अर्थ अपितु इस अर्थ की प्रासंगिकता और प्रयोग में बदलाव के साथ इसके अर्थ में भी तबदीली ला दी।

कहते हैं, व्यक्ति के परिवहन के साथ उसकी सभ्यता, उसकी संस्कृति, उसके आचार-व्यवहार, पोशाक, खान-पान का भी परिवहन होता है। इसी परिवहन से संस्कृति, भाषा, भाषी और भाषिकता भी पुष्ट होने के साथ ही साथ समृद्ध भी होते हैं। इस बार इस उद्देश्य को कोविड-19 ने भी पूरा किया है। एक स्थान से दूसरे स्थान, एक परिवेश से दूसरे परिवेश, एक देश से दूसरे देश, एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में प्रसार के साथ ही इसने अपने स्वरूप, अपने शब्द, अपनी प्रकृति और अपने शब्दों के विशिष्ट

अर्थ को भी प्रसारित किया है। जिसका नतीजा हुआ कि, शब्दकोश में शब्दों की नई कड़ियाँ जुड़ी और लोग उनसे परिचित भी हुए। जिस शब्द को जिस संदर्भ में प्रयोग किया जा रहा था, और अब जैसे किया जा रहा है, उससे हम सभी कहीं न कहीं संपर्क में जरूर आए हैं।

इस नवीन शब्द श्रृंखला और उसके अर्थ की अभिव्यक्ति के बीच भी एक वर्ग, एक समुदाय, एक कारक सदैव सक्रिय रहा है और इससे पहले भी सक्रिय रह कर न जाने कितने ही शब्दों के अर्थ और उसकी अभिव्यक्ति को जन सामान्य तक पहुँचाया है। जिसपर या तो जन की नज़र नहीं पड़ी या पड़ी तो उसकी आवश्यकता को रेखांकित नहीं किया गया। वह वर्ग-समुदाय-कारक है – अनुवाद का (इस पेशे से जुड़े अनुवादकों का)। चलिए इस कार्य के महत्व को एक व्यावहारिक उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं। मानिए कि, आप दक्षिण भारत के किसी शहर-स्थान पर घूमने गए हैं, सारी व्यवस्था के बावजूद आपको जिस व्यक्ति से अपनी व्यवस्था प्राप्त करने के लिए संपर्क करना है उस व्यक्ति विशेष को आपकी भाषा (हिंदी!!) नहीं आती और उस स्थान पर जाने से पहले आपने उस स्थान विशेष की बोली/भाषा नहीं सीखी। अब न तो आप अपनी बात समझने की स्थिति में हैं और न ही उस व्यक्ति की बात समझने की, इस स्थिति विशेष से आपको उबारने और उस व्यक्ति द्वारा उसकी सेवा आप तक पहुँचाने में जो संजीवनी आपके काम आ सकती है। वह माध्यम भले ही कोई भी हो, व्यक्ति का, मोबाइल का, पुस्तक का या किसी भी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट का, इसी प्रक्रिया या माध्यम को अनुवाद कहते हैं, जिससे कि आपकी समस्या का समाधान होगा। कई बार ऐसा भी होता है कि, हमारी बात, हमारी भाषा/बोली जानने वाला भी उसी प्रकार नहीं समझ पाता जैसे कि, हम समझाना चाहते हैं- इस स्थिति को आशय की भ्रांति या मिसइंटरप्रिटेशन कहते हैं।

अब आप यह मान सकते हैं कि, जो आपके जीवन, आपकी समझदारी, आपकी जिज्ञासा, आपकी रुचि को संतुष्ट और विकसित भी करता है उसे अनुवाद या अनुवादक कहते हैं। इसी तरह कोविड-१९ से जुड़े शब्दों को भी आपकी भाषा-आपकी बोली में जिसने आप तक पहुँचाया, आपकी जिंदगी को

सरल और सुरक्षित बनाया, आपको इस महामारी से लड़ने-जूझने का सामर्थ्य और साहस दिया उसे अनुवाद और अनुवादक कहते हैं। इससे परे भी क्या आपने कभी विचार किया है कि, आप जो पढ़ते हैं या जो फिल्म देखते हैं, आप जो सोचते हैं, जिस सोच से आपके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जिस ज्ञान से आप समाज, संस्थान या देश में सम्मान पाते हैं- उसमें अनुवाद कितना प्रभावी और महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। विश्व के किसी भाषा की कोई रचना, किसी रचनाकार की कोई कृति जब आप तक आपकी भाषा में पहुँचती है तो उसके पीछे यही अनुवाद और अनुवादक होते हैं। जिनके बारे में शायद ही आप या कोई सोचता है या होगा। इससे भी कहीं अधिक विस्तार को अपने आगोश में समेटे किसी रचना या रचनाकार को स्थानीय से अंतरराष्ट्रीय बनाने में भी अनुवाद की महती भूमिका है। आज के इस वैश्वीकरण में भी अनुवाद की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। इस योगदान के सापेक्ष एक बात तो तय है कि, अनुवाद ने हमारे जीवन को सरल बनाने के साथ ही साथ हमारी रुचि को पल्लवित और हमारे व्यक्तित्व को पुष्टि भी किया है। इस महत्व को व्यक्त करने वाली हाल ही की घटना शायद आपने पढ़ी हो न भी पढ़ी हो तो देखिए अखबार की यह कतरन-

गूगल अनुवाद से श्रिंगिक की विजयवाड़ा पहुंचाया



लक्ष्मण | अक्षरी संगठनकाल



कोच्चि से श्रिंगिक मेलाल ट्रेन में सवार प्रवासी मजदूर को विजयवाड़ा जाना या लोकनव वह गलती से लखनऊ पहुंच गया। हिन्दी और अंग्रेजी भाषा की जानकारी नहीं के कारण उसे लखनऊ में सीन दिन घटकरा पड़ा।

अत में उसकी समस्या का समाधान गूगल ने किया। गूगल के सहारे अधिकारियों ने उसे पर भेजने का प्रबंध किया। सोमवार को चारबाग में उत्तरने के बाद श्रिंगिक विजयवाड़ा जल्द को गोपन में ट्रॉप-उत्तर घटकरे गया।

तखनका में सुधार रत्न ट्रेन के विक्के में सवार श्रिंगिक विजय गत्स्ये।

नाम न समझ पाने के कारण वह परेशन ही गया। कोई सहायता न मिलने और सवा पैसा खत्म होने पर उसे लीटोकर फिर स्टेशन आना पड़ा। यहा अफसरों ने उसकी मदद के लिए गूगल का सहायता दिया। उसकी भाषा को रिकार्ड करने के बाद गूगल के माध्यम से उसका अनुवाद समझा। जानकारी मिलने के बाद उसके लिए समाझौता जाने का प्राप्त किया गया।

अब सोचने वाली बात यह भी है कि, इस कोरानाकाल से भारत के हर जिले, गाँव, मोहल्ले, क्षेत्र, पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण के सब इलाके प्रभावित हैं। और हर स्थान विशेष के खासो-आम

को कोराना से जुड़ी जानकारी, केंद्र सरकार द्वारा जारी होने वाले दिशा-निर्देश, अधिक से अधिक उनकी ही भाषा में प्राप्त हो रही है। आरोग्य सेतु ऐप पर 12 भाषाओं में जानकारी मुहैया करवायी जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी होने वाली जानकारी अनुवाद के बाद ही आम जनता तक उनकी भाषा में उनकी समझ में आ रही है।

इस समूचे प्रयास में कोविड-19 से लड़ाई में भाषा की सार्थकता को अनुवाद ने पूर्णतः काबिल और काबिज़ बनाया है। अनुवाद के अभाव में क्या आप इन सोशल डिस्टेन्सिंग, कोरेन्टाइन, लॉक डाउन, कम्यूनिटी स्प्रैड, कॉन्टेक्ट ट्रेसिंग, सूपर स्प्रैडर, इंडेक्स पेशेंट, सेल्फ करंटाइन, पेशेंट जीरो, पीपीई, सेल्फ आईसोलेशन, सोशल आईसोलेशन, हर्ड इम्यूनिटी, सैनेटाइज़ेशन, कोबिडियट के मायनों से अचूते नहीं रह जाते, यह अनुवाद की ही देन है कि, हम जान पाए कि, शब्दों का अर्थ बतौर सामाजिक अंतराल, एकांतवास, गृह-सीमितता, सामुदायिक प्रसार, संपर्क खोज, महा-प्रसारक, प्रथम रोगी, निजेकांतवास, मूल रोगी, निज सुरक्षा उपकरण, स्व-पृथकवास, सामाजिक अलगाव, सामूहिक रोक प्रतिरोधक, शुद्धिकरण, कोरोअहमक है। इस सच्चाई के साथ इतना तो मानना ही होगा कि, कोविड के लड़ाकों में चिकित्सक, चिकित्सा कर्मी, सफाई-सुरक्षा कर्मी, अत्यावश्यक सेवाओं में आने वाले बैंक कर्मी के साथ अनुवादक भी निश्चित रूप से कोविड -19 के लड़ाकू योद्धाओं में शुमार हैं। जिनके बिना इससे जुड़ी सारी की सारी नीतियाँ और नियम सार्थक नहीं हो पाती और होती भी तो उनके लिए जो भारत के गाँवों में, छोटे अंचलों में नहीं बसते और यदि बसते हैं तो अंग्रेजी जानते/बोलते हैं। जो कुल आबादी का लगभग मात्र 10 प्रतिशत ही है। फिर शेष 90 प्रतिशत लोगों को जारी सभी दिशा-निर्देश, सुरक्षा उपाय की जानकारी कैसे हुई और किसने कराई? यकीन इस 90 प्रतिशत को सेवा प्रदान करने वाले अनुवादक ही हैं जो भारतीय लोगों को भारतीय भाषा में भारतीय सुरक्षा के मानकों और उपायों की जानकारी प्रदान करते हैं।

अनुवाद आज के समय की एक मूल आवश्यकता है, जिसका महत्व केवल दस्तावेजों को एक भाषा से दूसरी भाषा में लाना ही नहीं है बल्कि, देश-समाज-व्यवस्था-तंत्र के कुशल परिचालन में योगदान देना भी है। यह सत्य स्वमेव अभिव्यक्त व स्थापित है। यह वह वर्ग है जो हमेशा ही परदे के पीछे या कहें नींव की ईट बनकर चलचित्र या इमारत की खूबसूरती का कारण बना रहता है और अपने वास्तविक भूमिका से लोगों को अनजान भी बनाए रखता है। अनुवाद को संचालित करने वाला अनुवादक ही इसका सूत्रधार होता है।

सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



પોર્ઝિટિવ થિંકિંગ

સદાશિવ સામન્તરાય

શામ કા ઢલના ઉજાલા રાત કે અંધેરે કે આગોશ મેં સમાતા જા રહા થા। બાદળોને ભી ગડગડાને કે સાથ બારિશ કી ફુહારોનો બરસને કી અનુમતિ દે દી થી। એસા માહૌલ ભલે હી દો યુવા પ્રેમિયાં કે ચેહરે પર મુસ્કાન ભર દે, પર રાજીવ કો એસા લગ રહા થા માનો ઉસકે દિલ કે આંસુ બાદળોને બુંદ બન કર નીચે ગિર રહે હોણોં। ઇંતજાર ઔર માયુસિયત ને ઉસે દુઃખી કર દિયા થા। વૈસે તો જિંદગી કે હર મોડ પર જૂઝના શાયદ ઉસકે જીવન કા એક અફ્સાના બન ગયા થા, પર આજ ઉસે એસા લગ રહા થા કી ઉસકા જૂઝારું દિલ ભી ઉસકા સાથ છોડને કો આતુર હૈ।

ઢેંકાનાલ બસ અંડુંને કે પ્રતીક્ષાલય કે પિછલી કોને વાલી બૈંચ પર વો પિછલે દો ઘંટે સે બૈઠા થા। રાત કે સાત બજાને કો જા રહે થે। કમ સે કમ પાંચ બાર વો ટિકટ કાઉંટર પર બૈઠે ટિકટ કલર્ક સે પૂછ ચુકા થા-“ભૈયા કાલ્હરિયા કી બસ કબ આયેગી?, પાંચ બજે છૂટને કા સમય હૈ, ઔર અબ તક બસ કા પતા નહીં,”

ઉસકી બાત પૂરી હોને સે પહલે હી હમેશા કી તરહ રૂખા સા જવાબ આતા, “બોલા ના ઇંતજાર કરો, બસ મેં કુછ યાંત્રિક ખરાબી આઈ હૈ, મરમ્મત હો રહી હૈ। બસ આતી હી હોગી,” યહ જવાબ ભી પહલે જવાબોની કી નકલ થી-માનો કેસેટ રિકાર્ડર પર ફિર વહી ગાના બજ ગયા હો। કુછ બોલને કો ઉસકે હોંઠ હિલે પર ઉસને શાબ્દોનો ગલે મેં અટકા લિયા। સોચા ઉસ બેચારે કી ભી ક્યા ગલતી હૈ-ઉસે ખબર મિલેગી તમ્હી તો બતાએગા ના।

પિછલે લગભગ છહ મહીને સે વો જબ ભી અપને ગાંવ જાને વાલી એકમાત્ર બસ કા ઇંતજાર કરતા, હમેશા ઉસી બૈંચ પર બૈઠતા થા। અગર કભી વો બૈંચ ખાલી ના હો તો બેચારા દુઃખી હો જાય કરતા થા। અભી ભી વહી હુઅ થા। પૂછુંકર વાપસ આને પર ઉસને પાયા કી એક અધેડું ઉમ્ર કા વ્યક્તિ ઉસી બૈંચ પર બૈઠ ગયા થા। “ચાચા જી મૈં યહાઁ બૈઠા થા, બસ કા ટાઈમ પૂછુંને ગયા થા,” ઇલ્લત્જા ભરી આવાજ મેં ઉસને ગુજારિશ કી થી।

“ક્યોં ભૈયા, બૈંચ ખરીદ લી હૈ ક્યા? દૂસરી બૈંચ ખાલી હૈ વહાઁ નહીં બૈઠ સકતે ક્યા?,” ઉસ વ્યક્તિ ને ખફા હોતે હુએ કહા। પર ઉસકી ગુજારિશ કો ઇજાત દેતે હુએ બડબડાતે હુએ પાસ કી ખાલી દૂસરી બૈંચ પર ચલા ગયા।

ઉસ વ્યક્તિ કો ધન્યવાદ કહ કર વો ઉસી બૈંચ પર બૈઠકર મોબાઇલ મેં વ્હાટ્સએપ કે મૈસેજ દેખને લગા। કિસી ને લિખા થા “હૈવ પોર્ઝિટિવ થિંકિંગ-સકારાત્મક વિચાર મન મેં લાને સે બિગડુંતે કામ ભી આસાની સે સુધર જાતે હૈને। મન હી મન સોચને લગા- ખાક સકારાત્મક વિચાર લાયેગા વો! કૌન સા કામ સુધર જાએગા? સુબહ સે અબ તક કૌન સા કામ સકારાત્મક હુઅ હૈ?- હર જગહ તો સિર્ફ નકારાત્મક ઘટનાઓની કા હી સામના કરના પડા હૈ બેચારે કો।

સુબહ ઉઠતે હી પિતાજી કા ફોન ઔર ધમકી ભરે લહજે મેં, તુરંત ગાંવ આને કા આદેશા।

ઑફિસ મેં છુટ્ટી માંગને પર બોસ ને જમકર ગાલી દેકર અર્જી ઉસકે મુંહ પર ફેંક દી થી।

લંચ મેં કેટીન દેર સે પહુંચા તો ખાના ખત્મ હો ચુકા થા।

શામ કો ગાંવ કી બસ કા વક્ત પાંચ બજે ઔર સવા ચાર બજે તક બોસ એક કે બાદ એક કામ દેતા જા રહા થા। કિસી તરહ ભાગ-ભાગ કર બસ સ્ટેપ્ડ પહુંચા તો પતા ચલા બસ ન જાને કબ છૂટેગી। ઉસ પર બારિશ ઔર પૂરે બસ અંડું મેં પાની ઔર કીચડું।

ઇસ માહૌલ મેં ક્યા ખાક સકારાત્મક વિચાર આયેંગે ઔર નાપુરાદ કૌન સા બિગડા કામ સુધર રહા હૈ?” લોગ સિર્ફ વ્હાટ્સએપ મેં ભાષણ દેના જાનતે હૈને। હમ લોગ બેવકૂફ હૈને જો ઇન્હેં પદ્ધ પદ્ધકર વક્ત ગુજારતે હૈને વો બડબડાયા ઔર ગુસ્સે સે મોબાઇલ દેખના બંદ કર દિયા। બૈંચ પર બૈઠા વો ઊંઘતે સહયોગિયાં કો દેખને લગા।

પિછલે છહ મહીને સે રાજીવ ઇસી બૈંચ પર બૈઠકર જબ ભી બસ કા ઇંતજાર કરતા ન જાને કિતને સપને ભરે ખ્વાબોને મેં

दूब जाया करता है। उस दिन को वह कैसे भूल सकता है? उस दिन भी वो उसी बैंच पर बैठा सोच रहा था कि कितनी अजीब बात है! पूरी दुनिया में शायद उसके गाँव की बस है जिसके छूटने का दिन, कोई वार नहीं है वरन् हर महीने के पूर्णिमा के दिन होता है। जो भी इस बस से उस तरफ जाते हैं उन्हें पूरा महीना पूर्णिमा के दिन का इंतजार होता है जब कि बस चलेगी। कई लोगों से इसका राज पूछने पर उसे पता चला कि उसके गांव के आसपास के क्षेत्र आज भी बिजली से कोसों दूर हैं। ऐसे में जो लोग दूर दराज के गांवों में रहते हैं, वो चांद की रोशनी में ही अपने-अपने गांव जा पाएंगे। राजीव के गांव जाना वैसे भी बहुत कठिन कार्य था। ढ़ेकानाल से बस पांच बजे छूटती है, दो घंटे बाद ब्राह्मणी नदी के घाट यानी कि काल्हूरिया घाट में उसे छोड़ देगी। उसका गाँव नदी के उस पार था, जहाँ उसे सात किलोमीटर की दूरी चल कर जाना पड़ता है रास्ते में एक जंगल को भी पार करना पड़ता है। गांव पहुँचते-पहुँचते रात के दस बजे जाते हैं। चूंकि पूरा क्षेत्र अंधेरे में दूबा रहता था, नदी पार करने के बाद लोग, अपने गाँव के पास के गाँवों को जाने वाले लोगों के साथ मिलकर सफर करते हैं। यह एक तरह का नियम सा बना हुआ था।

उस दिन बैंच पर बैठकर वो सोच रहा था उसके गाँव के आसपास जाने वाला कोई आदमी मिल जाए तो सफर बिना डरे-सहमे कट जाएगा। अगर कोई ना मिले तो काल्हूरिया नदी के पास की झोपड़ी, जिसे लोग प्रतीक्षालय की तरह इस्तेमाल करते थे- उसी में उसे रात गुजारनी पड़ेगी और सुबह को ही वो गांव जा पायेगा।

“आपको किस गाँव जाना है,” एक महिला की आवाज पीछे से सुनकर उसने पीछे देखा था। एक जवान, स्मार्ट लुकिंग लड़की ने पूछा था।

“जी मेरे से पूछा,” सकपकाकर राजीव ने थोड़ा आश्वर्य से पूछा था।

“जी आपसे ही पूछ रही हूँ” उस लड़की ने कहा।

“जी मंगलपुर” ना चाहते हुए भी उसके मुँह से निकल पड़ा।

“बहुत अच्छा! मुझे भी श्यामसुंदरपुर जाना है। आपके गाँव से थोड़ी दूर पहले पड़ेगा,”

“रात हो गई है। हम दोनों साथ चले जाएंगे” बड़े सुलभ भाव से उसने कहा था।

एक तरफ तो उसे देखकर और उसके प्रश्नों से उसका दिल अजीब भाव लिए धड़क रहा था, वहीं दूसरी तरफ एक

लड़की के साथ इतनी रात में जाने में भय भी लग रहा था।

न चाहते हुए भी उसे उस लड़की के साथ पैदल जाना पड़ा था। रास्ते में राजीव का मन तो कर रहा था कि कुछ बात करे पर हिम्मत नहीं जुटा पाया था। दोनों चुपचाप साथ-साथ जा रहे थे।

उसे अच्छी तरह याद है, यात्रा के दौरान चुप्पी तोड़ने के लिए उस लड़की ने पूछा,

“क्या नाम है आपका?”

“जी! राजीव.....”

“कहाँ से आये हो?”

“जी! भुवनेश्वर से.....”

“वहाँ क्या करते हो....?”

“जी! एक प्राईवेट बैंक में पी.ओ. की नौकरी करता हूँ”

“अच्छा! जी! आपने शादी की है?”

“जी! नहीं,” सकपका कर राजीव ने जवाब दिया था।

उसने तो बहुत सहजता से इतने प्रश्न पूछ लिए थे पर राजीव चाह कर भी कुछ पूछ नहीं पारहा था।

“जी...जी.....क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ?” बड़ी मुश्किल से सहमकर राजीव ने पूछा था।

“जी! रश्मि है मेरा नाम। मैं भुवनेश्वर में एक स्कूल में इंग्लिश की टीचर हूँ। मैं भी आपकी तरह शादीशुदा नहीं हूँ,” एक सवाल के तीन जवाब देते हुए उसने जोर से ठहाका लगाया था।

काफी देर चुपचाप चलने के बाद रश्मि ने फिर पूछा था “हम दोनों ही काफी देर से चुपचाप हैं। चुपचाप रहने से हम दोनों इस जंगल में डरने लगे हैं। कुछ बात करने से शायद डर कम हो जाएगा। अच्छा! आप अपने स्कूल के बारे में कुछ बताओ.....,”

“जी! मैं मैं....,” अचानक इस सवाल से उसकी बोलती बंद हो गई।

“अरे बोलो ना! शरमा गए क्या?” रश्मि ने हंसते हुए कहा था। सुनकर उसे बुरा भी लगा, अपने शर्मिलेपन पर खीझ भी आई थी।

“जी! दसवीं मैंने गाँव के स्कूल से 80 प्रतिशत अंकों से पास

की थी। मैं पूरे ब्लॉक में टॉपर था। +2 में पूरे जिले में मेरा दूसरा रैंक था। गाँव में कोचिंग की तो सुविधा नहीं थी, किसी अच्छे सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज में अच्छी ब्रांच नहीं मिल पाई। दूसरे प्रदेशों में पढ़ाने के लिए हमारे परिवार के पास इतना सामर्थ्य नहीं था। इसलिए मैंने बी.कॉम की पढ़ाई अब्ल दर्जे में खत्म कर एक प्राईवेट बैंक में पी.ओ. की नौकरी ज्वाईन कर ली। इस साल की प्रदेश सिविल सर्विसेज की परीक्षा मैंने भी दी है। देखिए क्या होता है," एक ही साँस में वो बोलता गया था।

बस इतनी ही बातें हो पायी थी और रश्मि का गाँव आ गया था। धीरे-धीरे रश्मि से बातचीत उसे अच्छी लगने लगी थी। पर बेचारा क्या करे शायद भगवान ने इतना ही मिलना मंजूर किया था।

"धन्यवाद, आपसे फिर दोबारा कभी मुलाकात होगी।" कहकर वो मुस्कुराते हुए अपने गाँव चली गई थी।

रश्मि चली तो गयी थी उसे ऐसा लग रहा था कि रश्मि उस का सुख-चैन लेकर चली गई थी। रश्मि के साथ बिताये लम्हे उसे दिन-रात ख्वाबों और ख्यालों में घेरे रहते थे।

"जी! बस दस मिनट में आ जाएगी," सुनकर-सोच का सिलसिला टूट गया। एक बंदे ने आकर कहा था। शायद बुकिंग क्लर्क ने उसे भेजा था।

राजीव हमेशा गाँव जाने पर काफी खुश होता है। खुश हो भी ना कैसे- बचपन से बड़े होने तक उसने हर वक्त गाँव में ही गुजारा था। शहर तो वो पिछले दो साल से नौकरी करने गया है। इकलौता बेटा होने की वजह से पिताजी भी उसे दूर नहीं होने देना चाहते थे। पर आज गाँव जाते हुए वो एकदम भी खुश नहीं था। आज सुबह-सुबह पिताजी का फोन आया था, "राजीव! तुम आज गाँव आ जाओ। मेरी तबीयत ठीक नहीं है," आवाज से साफ झलक रहा था कि वो किसी दर्द को दिल में दबाये, यह कह रहे थे।

"पिताजी! सच बोलिए बात क्या है, बीमारी का बहाना बंद करें.....," राजीव ने दो टूक पूछा था।

कुछ देर चुप रहकर पिताजी ने कहा था "देखो राजीव! तुम्हारी माँ की तबीयत तो ठीक नहीं रहती है और मेरा बीपी और शुगर भी ज्यादा रहता है। तुम तो हमारे इकलौते बेटे हो। माँ कह रही थी हमारे जाने के पहले तुम्हारा हाथ किसी अच्छी लड़की के हाथ देकर हम जाएंगे तो दिल हल्का रहेगा। तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छा रिश्ता आया था। मेरे एक दोस्त की बेटी है जो शहर में पली-बढ़ी है, काफी स्मार्ट

और अच्छी लड़की है। पर बार-बार पूछने पर भी तूने अब तक कुछ नहीं कहा। मेरे दोस्त का फोन आया था। बोल रहा था उसे एक अच्छा रिश्ता मिला है। अगर हम हाँ नहीं करेंगे तो वो उसी जगह उसे ब्याह देगा। राजीव! तू आज ही गाँव आजा, या तो कोई अच्छा प्रस्ताव मुझे दे या फिर मैं वहीं तेरा रिश्ता कर दूँगा..." कहकर पिताजी ने फोन काट दिया था।

कशमकश में सुबह से उसने ना तो ढंग से खाना खाया है ना ही चैन की साँस ली है। वो पिताजी को कैसे बताये कि उसने मन ही मन में ठान लिया था कि शहर की नहीं वो गाँव की किसी स्मार्ट लड़की से शादी करेगा। पर पिताजी हैं कि अपने दोस्त की बेटी से ही शादी करवाने पर तुले हैं। इसी वजह से उसने पिताजी के दिए प्रस्ताव को लटकाकर रखा था। पर आज पिताजी के सामने उसे फैसला सुनाना पड़ेगा। क्या बोलेगा? पिताजी तो बात-बात पर भावुक हो जाते हैं। दूसरा प्रस्ताव कहाँ से लायेगा- सोच-सोच कर उसका दिल भारी हो रहा था।

"राजीव! आप गाँव जा रहे हो?.....," आवाज सुनकर वो चौंक गया। उस जानी पहचानी आवाज को वो कैसे भूल सकता था। पीछे रश्मि खड़ी थी।

"यह भी कैसा इत्तफाक है। मैं जब भी गाँव जाने के लिए आती हूँ आप मिल जाते हो। मैंने मन ही मन भगवान से गुजारिश की थी कि आज कोई जान पहचान वाला मिल जाए। आज तो मौसम भी काफी खराब है वक्त भी काफी हो गया है।" ...रश्मि बोल रही थी और राजीव उसे एकटक देखता जा रहा था। मानों वो इसी वक्त के लिए छह महीने से इंतजार कर रहा था।

"जी हाँ! मैं भी गाँव जा रहा हूँ.....," राजीव ने धीरे से उत्तर दिया। पर खुशी से उसका मन चहक रहा था।

"तो चलिये, बस आ रही है," कह कर रश्मि बस की ओर चलने लगी।

थोड़ी देर में बस भी स्टैण्ड पर लग गई थी। दोनों बस में चढ़ गए।

"राजीव! गाँव क्या छुट्टी मनाने जा रहे हो," रश्मि ने बगल में बैठते हुए पूछा था।

"नहीं.....हाँ.....," क्या जवाब दे उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

"जी!..... बस ऐसे ही। पिताजी की तबीयत खराब है," राजीव और ज्यादा झूठ बोल नहीं पाया था।

आगे बोला-“और आप.....,” आज न जाने कहाँ से उसमें प्रश्न पूछने की हिम्मत आ गई थी।

“हाँ! मैं भी अपने गाँव ही जा रही हूँ,” रश्मि ने कहा था। “आज गाँव जा रहे हो.....काफी खुश होंगे ना.....?” रश्मि ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा था।

“जी.....हाँ,” राजीव ने बोल तो दिया पर उसके चेहरे के भाव साफ जाता रहे थे कि वो सही नहीं बोल रहा था। शायद कुछ छुपा रहा था।

“आज कुछ परेशान लग रहे हो।.....वैसे तो काफी खुशमिजाज दिखे थे पिछली बार। आज क्या गम पाले बैठे हो?” रश्मि ने उसके चेहरे के उड़े रंग को भाँपते हुए पूछा।

राजीव इस विषय पर बात टाल देना चाह रहा था। डर था कि कहीं असली बात उसकी जुबान से निकल न पड़े। बात को टालने का प्रयास करते हुए वो बोला, “आप तो काफी खुश होंगी। इतने दिन बाद घर वालों से मिलेंगी,”

“नहीं! खुशी की कोई बात नहीं है। बस माँ-बाप से झगड़ा करने जा रही हूँ। मुझे पूछे बिना मेरी शादी तय कर दी है। मैंने साफ कहा था कि मैं हमारे इलाके के ही किसी लड़के से शादी करूँगी पर जबरदस्ती शहर के एक अमीर घराने में शादी करवाने की ठान ली है। हम गाँव वाले क्या इतने गये गुजरे हैं कि एक लड़की को अच्छा वर ना मिल पाएगा? मैं तो साफ-साफ इस रिश्ते से इनकार कर दूँगी.....,” गुस्से एवं विरक्ति भाव लिए रश्मि ने अपने दिल की बात उसे बहुत सहजता से सुना दी थी।

“अरे! मेरी भी हालत तुम्हरे ही जैसी है। न जाने कैसा संयोग है कि मैं भी अपना रिश्ता तोड़ने गाँव जा रहा हूँ। पिताजी ने भी एक शहर के अमीर दोस्त परिवार की एक लड़की से शादी का प्रस्ताव दिया है। पिताजी की वैसे तो आज-तक मैंने कोई बात नहीं टाली है। पर आज मैं साफ़-साफ़ कहने जा रहा हूँ कि मैं शादी सिर्फ गाँव की लड़की से ही करूँगा,”

राजीव ने हड्डबड़ाकर बोल तो दिया पर सोच रहा था यह सब वो रश्मि को क्यों बोल रहा है। न जाने क्या सोचेगी बेचारी!

“अच्छा! आप भी गाँव की लड़की से ही शादी करना चाहते हैं? कैसी लड़की की तलाश में हैं आप?” रश्मि ने आँखे भटकाते हुए पूछा था।

जी..... बेचारा कैसे बताये कि उसने दिल ही दिल में रश्मि जैसी स्मार्ट सादगी भरी एवं भोली लड़की को दिल में उस दिन से बसा लिया है जब से उसने रश्मि के साथ वो तीन घंटे गुजारे थे। गाँव शहर का चक्कर तो एक बहाना मात्र था।

“सिंपल- मतलब..... स्मार्ट, इंटेलेक्चुअल, मॉडर्न, प्लिजिंग, लॉजिकल और एजूकेटेड बिल्कुल आपके जैसी.....” राजीव के मुँह से फट से ये वाक्य तीर की तरह छूटे थे। तुरंत अपनी गलती का अहसास कर बोला, “रश्मि जी! आय एम सॉरी न जाने क्या क्या बोल दिया।”

कुछ देर दोनों चुपचाप बैठे इधर-उधर की चीजें देखने का ढोंग करते रहे। काफी देर बाद सन्नाटे को तोड़ते हुए रश्मि बोली, “क्या इत्तफ़ाक है! हम दोनों ही अपना-अपना रिश्ता तोड़ने गाँव जा रहे हैं।” कहकर रश्मि ठहाका मारकर हँसने लगी।

इसके बाद दोनों चुपचाप खिड़की के बाहर तेजी से पीछे छूटते पेड़ों की छाया को देखते रहे। बीच-बीच में एक दूसरे को कनखियों से देख रहे थे और चेहरे के भाव पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। नजरों के जरिये दोनों ने शायद एक दूसरे को दिल की बात कह दी थी। पर दोनों ही शायद इंतजार कर रहे थे अपने दिल की बात को जुबान पर लाने की, इसके लिए दोनों के पास काफी समय था।

शायद आज पहली बार राजीव को पॉजिटिव थिंकिंग का अर्थ समझ आने लगा था। खुशी से उसकी आँखों में चमक आ गयी थी।

कार्यपालक निदेशक (वाणिज्य-सामग्री)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

हिंदी अब सारे देश की राष्ट्रभाषा हो गई है। उस भाषा का अध्ययन करने और उसकी उन्नति करने में गर्व का अनुभव होना चाहिए।

राष्ट्रभाषा किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, इस पर सारे देश का अधिकार है।

— सरदार बल्लभभाई पटेल



कोरोना के साथ कैसे जिएंगे हम

बर्नाली अधिकारी

वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के खिलाफ मुकाबला सबसे बड़ी चुनौती है। पूरी दुनिया इस वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए संघर्ष कर रही है। लेकिन आज तक ज्यादा सफलता नहीं मिली है। इस वायरस ने दुनिया भर में अब तक 22,067,415 से अधिक लोगों को संक्रमित किया है और कम से कम 777,681 लोग मारे गए हैं। लगभग 27 लाख से अधिक कुल संक्रमित और अब तक 52000 से अधिक लोगों की मौत के साथ कोरोनो वायरस महामारी की गति भारत में भी तेजी से बढ़ रही है। इस वायरस का न तो कोई इलाज है न तो इसका कोई टीका निकला है। अभी जो एकमात्र दवा उपलब्ध है, वह है अधिक सावधानी बरतें और सामाजिक दूरी बनाए रखें।

सरकार ने भारत में इसके संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं। सभी क्रॉस-नेशनल सीमाओं को सील कर दिया गया था, और रेलवे संचालन निलंबित कर दिया गया था। इसके अलावा, सभी स्कूल, जिम, मॉल, क्लब, होटल, सामुदायिक हॉल आदि बंद थे। लेकिन वायरस के फैलने के बढ़ते खतरे के कारण, 24 मार्च को, प्रधान मंत्री ने पूरे देश के लिए 21 दिनों के लॉकडाउन की घोषणा की, लोगों को अपने घरों से बाहर जाने पर प्रतिबंध लगाया गया था। बाद में लॉकडाउन को चार चरणों में लगभग 70 दिनों के लिए बढ़ा दिया गया था। लेकिन संक्रमण का ग्राफ फ्लैट नहीं हो रहा है। सरकार अब धीरे-धीरे लॉकडाउन के मानदंडों को शिथिल कर चुकी है। लेकिन संक्रमित व्यक्तियों की बढ़ती संख्या के साथ, संक्रमित होने की संभावना अब अधिक है। मान लीजिए, यह वायरस इतनी जल्दी नहीं जाएगा जब तक कि वैज्ञानिकों को इसके लिए टीका या कोई प्रभावी इलाज नहीं मिल जाता। लेकिन तब तक हम क्या करें और कोरोना से बचकर कैसे जिएँ?

आज मैं, संक्रमण रोग विशेषज्ञ डॉ. अमिताभ नंदी और डॉ. सुबर्णो गोस्वामी की दिये हुए सलाह से कोरोना और उसके साथ जुड़े हुए आपके स्वास्थ्य संबंधित कुछ टिप्पणी शेयर

करना चहती हूँ। आशा है कि ये कोरोना के खिलाफ लड़ने में मदद करेंगे।

क्या करना है:

1. हमारे भविष्य हमारे बच्चे। शुरू उनके साथ ही कर रही हूँ। अभी लॉकडाउन पीरियड में बच्चे पढ़ाइ करते हुए कोरोना के साथ लड़ पाएँ उन्हें ऐसा योद्धा भी बनाना है। उसके लिए सिर्फ इम्युनिटी ही नहीं उनके आदतों को भी बदलना है। जैसे कि-
- बच्चों को मास्क पहनने का महत्व समझाएँ और घर में ही कुछ देर मास्क पहनकर रहने का अभ्यास कराएँ, ताकि बाहर जाते समय वे मना न करें।
- शौच के बाद हाथ साबुन से धोना या सैनिटाइज करना।
- खाने से पहले हाथ जरूर साबुन से धोना।
- पर्याप्त पानी पीना।
2. आप अगर ऐसी जगह पर हाथ रखे या ऐसे सामान को छुएँ हो जहाँ पर वायरस होने की संभावना हो जैसे कि सार्वजनिक परिवहन, लिफ्ट का स्विच, डोरबेल का स्विच, दरवाजा का हैंडल, सीढ़ियों, कूरियर सेवा द्वारा वितरित पार्सल, नोट, सिक्का आदि, तो अपने आँख, मुँह और नाक को स्पर्श करने से पहले हाथों को साबुन से धो लीजिए या सैनिटाइज कर लीजिए।
3. जब आप बाहर जा रहे हों तो साथ में साबुन का छोटा टुकड़ा या 70% एल्कोहल हो ऐसा सैनिटाइजर ले जाएँ, कुछ टिस्सू पेपर या साफ रुमाल भी।
4. बाहर जाने पर मास्क जरूर पहने, ऑफिस में भी मास्क पहन कर रहिए। कपड़े का थ्री लेयर मास्क सबसे अच्छा है। नाक के ऊपर से ठोड़ी के नीचे तक मास्क होना चाहिए। मास्क पहनने के बाद भी न्यूनतम दो मीटर की दूरी बरकरार रखें।

5. यदि आप चश्मा पहन रहे हैं तो ठीक है, अन्यथा बाहर जाते समय धूप का चश्मा पहनें क्योंकि वायरस हमारे शरीर में आँखों के माध्यम से भी प्रवेश कर सकता है।
6. जिन लड़कियों / महिलाओं के लम्बे बाल हैं, उन्हें बाहर निकालने से पहले अपने बालों को अच्छे से बाँधना चाहिए और स्कार्फ या दुपट्टे से ढकना चाहिए।
7. कार्यालय में अपने स्वयं के साफ कप और प्लेट का उपयोग करें।
8. ऑफिस में लंच के लिए घर का बना खाना ले जाना अच्छा है। खाना अगर बाहर से मंगा रहे हैं तो खाना गरम करके खाइए।
9. बाहर जाते समय धोने योग्य जूते पहनें। वापस लौटने के समय घर में प्रवेश करने से पहले उतार दें, और साबुन के पानी से धोने के बाद अंदर ले जाएँ। इतना ही नहीं जो ड्रेस आपने पहनी थी, उसे धो दीजिए और अपने चश्मा, मोबाइल आदि को सैनिटाइज कर लीजिए। उसके बाद आप साबुन और सैपू से नहाएं।
10. रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने के लिए, आपको आसानी से पचने योग्य खाने का सेवन करना चाहिए। पर्याप्त आराम करें और थोड़ा व्यायाम करें।
11. थोड़ी सी धूप स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती है। यही कारण है कि आप थोड़ी देर में सुबह की सैर के लिए जा सकते हैं।

12. अगर बाहर से कोई दोस्त, रिश्तेदार, नौकरानी, मैकेनिक, तकनीशियन आदि आता है उसे घर में प्रवेश करने की अनुमति देने से पहले उन्हें अपने हाथों और पैरों को साबुन के पानी से धोने के लिए कहें।

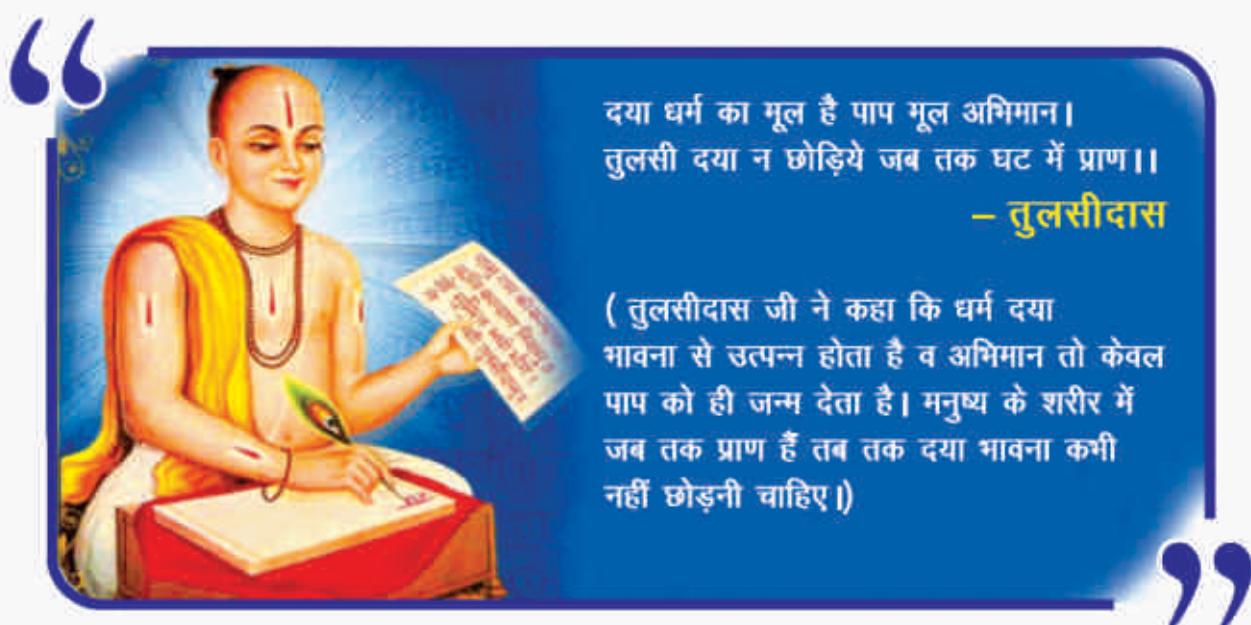
क्या नहीं करना है:

1. आम लोगों को हाथ के दस्ताने नहीं पहना चाहिए।
2. कुछ दिनों के लिए घड़ी, ज्वैलरी आदि न पहनें तो अच्छा है क्योंकि धातु की ऊपर कोरोना वायरस पांच दिनों तक जीवित रह सकता है।
3. कुछ महीनों के लिए जिम, सैलून, ब्यूटी पार्लर, शॉपिंग मॉल, रेस्तरां जाने से बचें।
4. भीड़, बड़ी सभा, सामाजिक समारोह से बचें।
5. व्यायाम करते समय मास्क न पहनें।

कोरोना के खिलाफ लड़ाना युद्ध से कम नहीं है। इस लड़ाई में हम सभी को भाग लेना होगा। सरकार लॉकडाउन मानदंडों को शिथिल कर चुकी है, लेकिन हमें इसे आत्म नियंत्रण के साथ लागू करना होगा। सभी के समर्थन से, हम इस लड़ाई को बहुत जल्द जीतेंगे।

घर पर रहें, सतर्क रहें, सुरक्षित रहें।

पती – श्री प्रशांत मंडल
प्रबंधक (धातुकर्म)
निगम कार्यालय
भुवनेश्वर





धर्म बनाम इंसानियत

शगुफ्ता जबीं

अखबारों की सुर्खियाँ गर्म थीं। टी०वी० चैनलों को तो जैसे मौका मिल गया था। दो-तीन दिन तो वे आसानी से इस मसाले के द्वारा अपनी पकवान को खुशबूदार बना सकते थे। अब आप सोच रहे होंगे कि मामला क्या था! दरअसल एक बार फिर से रथ-यात्रा निकाली जा रही थी। परिषद अपनी मिशन पर अड़ा था कि इस बार के संग्रहित ईंटों से मंदिर का कार्य होना अवश्यभावी है। मुसलमानों की समितियाँ यह साबित करना चाहती थीं कि मस्जिद की तामीर ही सही है। दोनों धर्मों के बीच नफरत की चिंगारी भड़क कर शोलों का रूप ले रही थी। अफ़वाहें परवान चढ़ रही थीं कि किसी भी समय दंगा भड़क सकता था।

इस प्रकार का मेरा यह पहला अनुभव था। मन में एक घुटन सी थी और वह आतंकित था क्योंकि मुझे अपनी नौ माह की बच्ची की रक्षा की फिक्र थी। बार-बार एक बास्केट में उसके कुछ कपड़े और दूध वगैरह रखती और सोचती रहती कि अगर दंगाई आ भी गए तो उसे लेकर कहीं भाग जाऊँगी। माँ का मन यह मानने को तैयार नहीं था कि घर से अधिक सुरक्षित ठिकाना और कोई नहीं। दरअसल अब-तक के जीवन में हुए मेरे अनुभव वर्तमान की परिस्थितियों से मेल नहीं खा रहे थे और यही मेरे मन के भीतर की उथल-पुथल और असमंजस का कारण था।

जीवन के हर मोड़ पर मेरे गहरे और सच्चे मित्र हिंदू धर्म के ही थे। मुसलमान होते हुए भी उनके साथ बिताए किसी क्षण में भी यह अहसास नहीं हुआ कि हमारे धर्म अलग हैं। बचपन की मेरी सहेली माया के घर गरम-गरम चावल-दाल और सब्ज़ी-पापड़ एक ही थाली में खाने में न तो मुझे कभी कोई संकोच हुआ और न ही उसने मेरी सेवइयों में मिठास की जगह सांप्रदायिकता की कड़वाहट चखी। कॉलेज के दिनों में मेरी ब्राह्मण दोस्त मीता की माँ, जिन्होंने शुद्धता के लिए अपना चौका अलग कर रखा था, स्वयं अपने हाथों से प्यार से मुझे खाना परोसती थीं। शादी के बाद अपने ट्यूमर के ऑपरेशन के समय जब मैं मौत के बिलकुल करीब थी, तब अपने सहकर्मी कृष्णा का मेरे जीवन की रक्षा के लिए उपवास रखना आज भी याद है मुझे। इन सभी अनुभवों से

अलग एक और अनूठा अनुभव मुझे चैटर्जी आँटी के साथ बिताए दो दिनों में हुआ जिसने मुझे सिखाया कि इंसानियत से बड़ा कोई धर्म नहीं.....!

चैटर्जी आँटी से मेरा मिलना महज़ एक इतिफ़ाक़ था। उन्हें लखनऊ से दामनजोड़ी अपनी बेटी के पास जाना था। उनके दामाद मेरे शौहर के विभाग में ही दामनजोड़ी में काम करते थे। भुवनेश्वर में उन्हें ट्रेन बदलनी थी परंतु जोर के बुखार के कारण उन्हें हमें भुवनेश्वर में ही उतारना पड़ा। उन्हें हम अपने घर ले आए क्योंकि उनके दामाद किसी अपरिहार्य व्यस्तता के कारण दो दिन बाद उन्हें लेने के लिए आने वाले थे।

चैटर्जी आँटी पूरी दो रातें और एक दिन हमारे साथ रहीं। उनकी तबीयत बहुत खराब थी। पूरे समय उन्हें उल्टियाँ होती रहीं और सीने में तेज़ दर्द उठता रहा। डॉक्टर की सलाह पर भी वे अस्पताल जाने को तैयार न हुईं। बस ये कहती रहीं कि अगर मैं अस्पताल चली गई तो डॉक्टर मुझे वापस आने नहीं देंगे मानो हमारे साथ समय बिताना उन्हें अधिक प्रिय था। कलकत्ते में जन्मी आँटी लखनऊ में पली-बढ़ी थीं और शादी के बाद भी वहीं रहीं इसलिए उनकी बोलचाल की भाषा पर उनकी मातृभाषा का प्रभाव बिलकुल नहीं था। किंतु बंगाली ब्राह्मण होने के नाते छुआछूत और ऊँच-नीच के चक्रव्यूह से वो निकल नहीं पाई थीं। वे कटूर शाकाहारी थीं क्योंकि कच्ची उम्र में विधवा होने के कारण समाज ने अपने पैरों तले उनकी अभिलाषा और इच्छा-रूपी रीढ़ की हड्डी को तोड़-मरोड़ कर रख दिया था और वह चाह कर भी कभी खड़ी नहीं हो पाई। हाँ, फलस्वरूप वह सहनशील ज़रूर हो गई।

स्टेशन से लौटने के बाद अगले छत्तीस घंटे वह तकलीफ़ के कारण सोई नहीं। मैं रात-दिन उनके पास बैठ कभी पीठ और सीना सहलाती तो कभी उनकी उल्टियाँ साफ़ करती। न जाने वह कौन सा बंधन था जिसके कारण मैं उनका ख्याल रख रही थी। आँटी भी अपनी बेटी की तरह मुझसे बातें कर रही थीं। उन दो दिनों में उन्होंने किसी चलचित्र की भाँति अपने जीवन की पूरी कहानी मेरे सामने रख दी।

अपने जीवन के सुख-दुख के हर पल उन्होंने मुझे सुनाए। पति की बीमारी और उनकी मौत के बाद रिश्तेदारों के उनके प्रति स्वार्थी रवैये का ब्यौरा दिया। दोनों बेटियों के जन्म की खुशी से लेकर अपने वैधव्य के कड़वे अनुभवों को उन्होंने मेरे साथ जिया। उन दो दिनों वे मेरे हाथ का बनाया खाना खाती रहीं और वापसी के सफर में भी उनके जीवन का आखरी अन्न मेरे घर की खिचड़ी और फ़ीरनी ही रही। जिस पल मैं सजल नेत्रों से उन्हें विदा कर रही थी उस समय मेरे ख्वाबों-ख्याल में भी यह बात नहीं थी कि वो हमारी पहली और आखरी मुलाकात थी। 13 घंटे का सफर करने के बाद वह अपनी बेटी के पास पहुँची और लखनऊ के घर की जिम्मेदारी चाबियों के रूप में पकड़ाकर घंटे भर बाद ही सदा के लिए हर जिम्मेदारी से मुक्त हो गई। उनकी बेटी की इस बात पर मुझे यकीन नहीं हुआ कि जीवन भर उन्होंने किसी मुसलमान के घर पानी तक नहीं पिया था। मेरे घर को मंदिर बताने वाली आँटी की शायद यह कोई सामाजिक मजबूरी रही होगी। प्रेम और सौहार्द से भरी इन यादों के सामने मुझे आज मंदिर और मस्जिद का यह झगड़ा निरर्थक लग रहा था। मैं पूछना चाहती थी उन धर्म के ठेकेदारों से कि जब राम और रहीम दोनों का लहू एक ही है और दोनों परमात्मा के प्रेम में मंदिर और काबा की सात परिक्रमाएँ करते हैं तो धर्मों की यह भ्राति क्यों ??? कमजोरी शायद हमारे भीतर ही है। हमने वेद, कुरान, गीता सबको भुला दिया है। याद रह गए हैं तो 'हर हर महादेव' और 'नारे तकबीर, अल्लाहु अकबर' जैसे नारे!

मेरी मनन की तंद्रा अचानक जोरों की आवाज़ ने भंग कर दी। रात की कालिमा के बढ़ते ही दोनों गुटों की नारेबाज़ी जोर पकड़ने लगी। सन्नाटे को चीरती आवाजों ने मेरी धड़कनें बढ़ा दी। मेरी आँखों के सामने बचपन से लेकर अबतक की सारी यादें किसी लट्टू की तरह नाचने लगीं। अंतर्द्वाद के कारण मेरा गला घुटने लगा। जोर की चीख मार कर, अपनी बेटी को कसकर अपने कलेजे से चिपटा कर मैं रोने लगी। मेरे सजल नेत्रों के सामने कबीर जी की यह पंक्तियाँ नाचने लगीं.....

"मोको कहाँ ढूँढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास मैं
ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकांत निवास में
ना मंदिर में ना मस्जिद में, ना काबे कैलास में
कहत कबीर सुनो भई साधो, मैं तो हूँ विश्वास में।"

पत्री – श्री जावेद रेयाज़
महाप्रबंधक (औद्योगिक अभियांत्रिकी व अनुपालन)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



यह ज़िन्दगी अधूरी !

साक्षी स्मृति

कैसी ये बीमारी, छायी महामारी।
बच्चे हो या बूढ़े, किसी को न छोड़।
इसको न है खेद, करके हम सबको
घर पर कैद।
स्कूल, कॉलेज और कारखानों पर
पड़ गए ताले,
काम पर हैं सिर्फ डॉक्टर, सफाई कर्मचारी, बैंकर
और पुलिस वाले।
इस दौरान लोगों ने अपनों की
अहमियत है समझी,
देखने को मिली पर्यावरण की शुद्धि।
बढ़ते जा रहे हैं लॉकडाउन के दिन,
देखते ही देखते निकल गए कई महीनों के दिन।
बढ़ती जा रही है कोरोना की शक्ति,
यही समय है दिखाने की देश भक्ति।
घर पर ही रहे, धोएँ साबुन से हाथ,
बहार निकलने पर
ले जाएँ मास्क अपने साथ।
अब रह गया सबके मन में एक ही सवाल,
कब तक रहेगी दो गज दूरी
और यह ज़िन्दगी अधूरी?

पुत्री – श्री चंद्र मोहन महान्त
सहायक महाप्रबंधक (मा.सं.वि.)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र, अनुगुल

सौर ऊर्जा के माध्यम से दूरस्थ गाँवों को रोशनी

भूमिका

कोरापुट जिले के कई गाँव दुर्गम क्षेत्रों में अवस्थित हैं। इन क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाएँ जैसे बिजली आदि का घोर अभाव है। यहाँ रोशनी के लिए मिट्टी के तेल के लैंप का उपयोग किया जाता है और इस कारण सूरज ढलने के बाद घरों में महत्वपूर्ण कार्य जैसे कि खाना बनाना, बर्तन धोना, सिलाई और अन्य कार्यों को करने में बहुत ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। खास तौर पर विद्यालय जाने वाले बच्चों की पढ़ाई इससे अत्यधिक प्रभावित होती है।

इस स्थिति से अवगत होने के पश्चात नालको फाउंडेशन ने इन ग्रामीणों के जीवन को उज्ज्वल बनाने के लिए प्रयास करना आरम्भ किया। वर्ष 2014-15 में, नालको फाउंडेशन ने ओआरडीए (ओडिशा रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट अथॉरिटी) के साथ भागीदारी में पायलट आधार पर 02 गाँवों में सोलर स्ट्रीटलाइट परियोजना को कार्यान्वित किया तथा पुनः 2016-17 में, विन्सेंट के साथ साझेदारी करके 08 अन्य गाँवों को सोलर स्ट्रीट लाइट परियोजना के माध्यम से बिजली पुहँचाई। परंतु, संस्थापन के बाद उचित रखरखाव सेवा प्रदान करने में परियोजना भागीदारों के अक्षम होने के कारण सफलता बरकरार नहीं रह सकी।

क्रियान्वयन कार्यप्रणाली

सामुदाय के साथ मेलजोल बढ़ाने के माध्यम से नालको फाउंडेशन ने बुनियादी धरेलू उपकरणों के साथ-साथ स्ट्रीट लाइटिंग के लिए बिजली की अति आवश्यकता को महसूस किया। जन प्रतिनिधियों और ग्रामीणों के सहयोग से आवश्यकता आकलन के लिए एक आधारभूत सर्वेक्षण किया गया। इस प्रक्रिया के दौरान हमारी टीम ने महसूस किया कि इन गाँवों में इनके जीवन को बेहतर बनाने व उनके प्रभावी कार्य समय को बढ़ाने के लिए सौर प्रकाश की व्यवस्था करने की नितांत आवश्यकता है। नालको फाउंडेशन ने सभी हितधारकों जैसे ग्रामीणों, सरपंच, ग्राम पंचायत के साथ कई दौर की बैठकों का आयोजन किया। ग्रामीणों ने परियोजना की विभिन्न गतिविधियों जैसे परिवहन और स्थापना के लिए अपना समर्थन प्रदान करने हेतु सहमति दी।

परियोजना की चुनौतियां

- समीपस्थ सड़क संपर्क स्थान से उपकरण तथा सामग्रियों के परिवहन सुविधा का अभाव।
- क्रियान्वयन एजेंसी तथा नालको फाउंडेशन के कर्मचारी व ग्रामीणों के मध्य भाषा संबंधी बाधाएं।
- शिक्षा व तकनीकी कौशल का अभाव।
- माओवादी प्रभावित क्षेत्र।

परियोजना के क्रियान्वयन संबंधी सभी महत्वपूर्ण कार्यों के लिए एक साझेदारी 'कर्मा' (आईआईटी भुवनेश्वर के अधीन एक स्टार्ट-अप) के साथ की गई, जिसने परिचालन चालू करने के पश्चात रखरखाव सेवाओं का भी आश्वासन दिया। संधारणीय आधार पर इच्छित परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य के साथ परियोजना के कार्यान्वयन के समग्र विकास को विकसित करने के लिए कर्मा के साथ व्यापक बातचीत की गई। सौर गृह समाधान एवं साथ ही साथ स्ट्रीट लाइट के संस्थापन के लिए नवंबर 2018 के दौरान एक कार्य-आदेश जारी किया गया। भाषा की बाधा को दूर करने के लिए, प्रत्येक गाँव में एक स्थानीय नागरिक की पहचान की गई।

प्रथम चरण में पोट्टांगी तथा दामनजोड़ी के 9 गाँवों हेतु योजना बनाई गई। जिसमें रतमती, जामुकोली, माझीयांबा, बारागांदा गाँव रहे, यह गाँव बिजली एवं सड़क संपर्क के बिना जिले के दूरवर्ती भाग में स्थित हैं अतः इन गाँवों को प्रथम चरण हेतु चयनित किया गया। उपरोक्त चार गाँवों में पहुँचने के लिए पहले 3 पहाड़ों को पार करना पड़ता है और फिर 2 से 3 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। इस परियोजना का क्रियान्वयन तथा स्थापना पश्चात रखरखाव करना भी बहुत ही चुनौती पूर्ण था। ग्रामीणों के लिए लाइट चालू होने का दिन अविस्मरणीय था क्योंकि उनके अपने गाँवों में यह बिजली का पहला अनुभव था।

अन्य पांच गाँवों में, नालको फाउंडेशन ने गाँव के घरों के आस-पास सड़क किनारे सौर लाइटें स्थापित करने की योजना बनाई। इन सभी पांच गाँवों में सरकार द्वारा बिजली आपूर्ति उपलब्ध करायी गयी है, किंतु स्ट्रीटलाइट चलती हालत में उपलब्ध नहीं है। ग्रामीणों की सहमति के साथ, वित्त वर्ष 2018-19 के दौरान पीआरआई सदस्य एवं ओआरईडीए, फाउंडेशन द्वारा अंबगाँव को छोड़कर सभी गाँव में सौर स्ट्रीट लाइटें स्थापित की गईं।

कर्मा द्वारा समय पर रखरखाव संबंधी सहयोग ने ग्रामीणों का विश्वास जीतने में नालको फाउंडेशन के लिए अनुकूल परिस्थिति का सृजन किया, जिससे अन्य गाँवों में इस परियोजना के क्रियान्वयन में सहायता प्राप्त होगी।

प्रथम चरण में प्राप्त सफलता के आधार पर, नालको फाउंडेशन ने पोटांगी क्षेत्र के 11 निकटवर्ती गाँवों में स्ट्रीट लाइट स्थापित करने का निश्चय किया। कर्मा को दूसरा कार्य-आदेश 06.02.2019 को जारी किया गया। टीम ने 9

गाँवों में 149 स्ट्रीट लाइटों की स्थापना सफलतापूर्वक कर ली है। फाउंडेशन ने अन्य 2 गाँवों में 41 सौर स्ट्रीटलाइटें स्थापित की, जिससे स्थानीय आबादी में फाउंडेशन की विश्वसनीयता और भी सुदृढ़ हुई है।

परियोजना के लाभ

इस परियोजना में प्रत्येक गाँव के सभी घरों को आवश्यक प्रकाश उपलब्ध कराया गया है। इससे महिलाओं में उद्यमी भाव को भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। सौर प्रकाश की सहायता से सायं के समय परिवार की आय बढ़ाने में सहायक गतिविधियाँ जैसे - पिसाई तथा सिलाई अब उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बन गई है। बच्चे अधिक समय तक पढ़ाई करके इससे लाभान्वित हो रहे हैं। गांव के युवा स्ट्रीट लाइटों के नीचे आपस में मिलजुल कर उत्पादक कार्यों में लगे हुए हैं। सायं एवं रात्रि के समय प्रकाश की उपलब्धता के कारण सामाजिक कार्यक्रमों एवं उत्सवों का आयोजन किया जा रहा है।





सौर स्ट्रीटलाइट तथा सौर गृह समाधान के प्रचालन तथा
मरम्मत संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए 40 ग्रामीण युवा

परिणाम

- क. नालको फाउंडेशन ने साझेदार संस्था मैसर्स कर्मा के साथ 18 परिधीय गाँवों में सौर स्ट्रीट लाइट एवं गृह समाधान की स्थापना सफलतापूर्वक की।
- ख. खराब स्ट्रीट लाइटों के संबंध में शिकायतों का 15 दिनों के भीतर समाधान किया जाता है।
- ग. नालको फाउंडेशन ने मैसर्स कर्मा के तकनीकी सहयोग से स्थापित सौर लाइटों के बाधा रहित संचालन एवं मरम्मत सुनिश्चित करने हेतु 40 स्थानीय युवाओं के लिए 1 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया।
- घ. कुल मिलाकर यह परियोजना सभी हितधारकों अर्थात् नालको फाउंडेशन, कर्मा, ग्रामीणों, पीआरआई सदस्यों, स्थानीय नेताओं तथा गाँवों के युवाओं के वृहत् सामूहिक प्रयास के फलस्वरूप सफलतापूर्वक सम्भव हो सकी।

आगामी योजना

नालको फाउंडेशन दामनजोड़ी ने ओआरईडीए, कोरापुट से मंजूरी प्राप्त होने के अनुसार पोटांगी तथा दामनजोड़ी के परिधीय 7 अन्य गाँवों में सौर विद्युतीकरण परियोजना की योजना बनाई है।

निगम सामाजिक उत्तरदायित्व विभाग
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

“



ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय ॥

— कबीरदास

(कबीर जी ने कहा है कि मान और अहंकार का त्याग करके ऐसी बाणी में बात करें कि औरों के साथ—साथ स्वयं को भी खुशी मिले। अर्थात् भीठी बाणी से ही दिल जीते जाते हैं।)

”



रफ़-कॉपी

अश्विनी सूतार

एक प्रेमिका की सहेली की तरह
जो बात प्रेमी को कही नहीं जा सकती
मगर उसे निःसंकोच और निश्चित रूप से
कही जा सकती है
एक दोस्त की तरह
कितनी इधर-उधर की लाइनें खींचते हुए
मन को हल्का किया जाता है
कितनी इच्छाओं को
जो लापरवाही से
उसके अप्रस्तुत पृष्ठ पर
लिखी जाती है
जिसका उसने कभी हिसाब नहीं रखा है
न कभी उसने परिणाम घोषित किया है
न कभी खुद को सजाया है
न कभी सजने की ज़िद की है
खुशी और दुःख के पल को
न जाने कितनी
नासमझ चित्रकारी से भिगोया है
अपने सफेद अंग में
वास्तव में यह अपरिचित रफ़-कॉपी
प्रेम में न होते हुए भी
कई सारे मधुर चुंबन को अपनाया है
विरह में न होते हुए भी
सहा है उसने कितने दुःखों को
सहेली की सहेली है वह
एक सहेली से वह कितनी ही अपनी है
प्रियजन की सारणी में न होते हुए भी
प्रियतम कोई आपका एक अपना है

कनिष्ठ प्रबंधक, (निगम संचार व जन संपर्क)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



कुछ पाने की चाह में...

पूजा प्रियदर्शिनी नायक

निकल तो चले हैं जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए,
कुछ पाने की चाह में,
कुछ आशा, कुछ उमंग,
कुछ एहसास और जज्बात लिए,
यूँ तो पहले जिंदगी जी रहे थे ऐसे ही,
पर जिंदगी ने
जैसे ही हमें उकसाया, तो निकल पड़े हम,
कुछ पाने की चाह में,
सुना था जैसे सोच रखोगे
जिंदगी में वैसे बनते चले जाओगे,
आगे-आगे बढ़ते चले,
तो पता चला जैसा सोचा था उससे
बेहतर बन गए हैं।
जैसा सोचा था वैसा पाया तो नहीं हमने,
ना पाने के गम से ज्यादा
बेहतर बनने की खुशी है हमें,
बड़ा सोचना छोड़ा तो नहीं,
बस आगे बढ़ने का रास्ता बदला है हमने,
कुछ पाने की चाह में,
कभी सोचा है दोस्तों, कहीं हम भूले तो नहीं जीना
जिंदगी को?
कभी सोचा है दोस्तों कहीं हम भूले तो नहीं जीना
जिंदगी को?
जिंदगी जीने के लिए, पाने की चाह जरूरी है लेकिन
जिंदगी जीने के लिए, पाने की चाह जरूरी है लेकिन,
भूलना नहीं जिंदगी जीना दोस्तों, भूलना नहीं जिंदगी
जीना दोस्तों,
बस कुछ पाने की चाह में.....

पत्नी - श्री चंदन बिधर
प्रबंधक, (सतर्कता)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



नया 'सामान्य'

संपदा पती

सड़कें जलते हुए कोयले की तरह और हवा मानो आग उगल रही हो। एक परिवार के 5 सदस्य अपने माथे का पसीना पोंछते हुए कदम बढ़ाते हुए चल दिए हैं।

परिवार का सबसे बुजुर्ग व्यक्ति अपने झुर्रियों वाले चेहरे को ढककर अपने झुके हुए कंधों से चल रहा है। अपने परिवार को खाना खिलाने की जिम्मेवारी उसके लिए इस समय की सबसे बड़ी समस्या है। इस मौसम में, अपने कंधों को नीचे खींचते हुए व अपने सिर को झुकाते हुए चल रहे थे। उनका नाती, लगभग 4 वर्ष की आयु का, भारी परेशानी के बावजूद सामान को खींच रहा था। क्योंकि, अब यही जीवन था।

कोविड-19 के समय में धनी व निर्धन का जीवन बहुत कठिन था, यह समय संसार को दो भागों में विभाजित करने वाला था, यही स्थिति दोनों में समान बनी हुई है। जब धनी सैनेटाईजर एवं मास्क प्राप्त करने के लिए प्रयासरत थे, निर्धन दिन के दो समय के भोजन के लिए तथा अपने एक महीने के वेतन के लिए अपने मालिक से निवेदन कर रहे हैं। जब हम भोजन के साथ अपने फ्रीज को भरते हैं तथा पेय पदार्थों को साथ अपने रसोईघर की अलमारियों में इकट्ठा करते हैं तब भाग्यहीन अर्थात् निर्धन लोग बिना दाल व सब्जी केवल चावल खाते हैं। जिस घर में हम बरसात, हवा तथा सूर्य की गर्मी से अपने बचाव के लिए रहते हैं वह घर भी इन्हीं भाग्यहीन लोगों ने बनाया है क्योंकि यही उनके लिए रोटी कमाने का आधार था।

यदि हमारे लिए सड़क पर बना खाना (स्ट्रीट फूड) नहीं है तो इसका अभिप्राय है कि उनके लिए आय का साधन नहीं है। यदि हमारे लिए सड़क के किनारे बनी दुकानें अर्थात् रेहड़ी-फड़ी नहीं हैं तो इसका मतलब उनके लिए अब कोई व्यवसाय नहीं है। यदि हमारे पास घर पर काम करवाने के लिए कामवाली, सहायक या श्रमिक नहीं हैं तो इसका अभिप्राय है कि उनके पास कोई कार्य नहीं है।

पूरा संसार सब कुछ सामान्य होने के लिए प्रार्थना कर रहा है। परंतु शायद सामान्य चुनने का अवसर ही नहीं है।

शायद, हम जब इस लॉकडाउन से उभरेंगे तब हम थोड़ा आभारी होना सीखेंगे। हम हमारे लिए काम करने वाले लोगों के लिए थोड़े और कृतज्ञ होंगे, जब हम थके हुए होते हैं तो हमारे लिए खाना प्रदान करने के लिए स्ट्रीट वेंडरों के लिए थोड़ा और आभारी होंगे। हम थोड़ा और सचेत होंगे कि हमने क्या खर्च किया, हमने क्या खाया, हम जनता में कैसा व्यवहार करते हैं, हम अपनी स्वच्छता कैसे बनाए रखते हैं। थोड़ी कृतज्ञता हर उस व्यक्ति विशेष के लिए होगी जो हमारी सहायता करते हैं। हम अपने आस-पास के इन निर्धनों, गरीब, मजदूरों को देखते हुए उनके प्रति अधिक कृतज्ञता व्यक्त करेंगे, उनके अधिक आभारी होंगे, उनका अधिक सम्मान करेंगे; जिससे शायद उनका जीवन भी अधिक आसान और व्यवस्थित हो सकेगा।

यह एक नया 'सामान्य' होगा तथा शायद हमें इसका आदी बनने में थोड़ा वक्त लगेगा, फिर भी यदि हम इसे नया सामान्य बनाने में कामयाब हो सके तो यह संसार और भी बेहतर स्थान बन सकेगा। समय मनुष्य को आजमाता है, आज के इस कठिन स्थिति में हमें दूसरों का उतना ही छ्याल रखने की जरूरत है, जितना कि, हम अपना या अपनों का रखते हैं। इस नए सामान्य में वास्तव में ज्यादा से ज्यादा बातें असामान्य ही हैं, हो रही हैं या होंगी। एक बात हमने और भी सीखी है कि, नए सामान्य की परिभाषा और जरूरत के साथ हम सभी और अधिक प्रयास एवं लगन के साथ जुड़ रहे हैं, जो इन बातों को आज भी उचित न मानकर हिदायतों की अनदेखी कर रहे हैं, हममें से कोई भी समय-समय पर उन्हें बताता है, समझाता है, यह इस बात का सबूत है कि, हम अपने परिवार, देश, समाज और मानव जाति के प्रति अधिक सचेत हैं। इस नए सामान्य की एक शर्त यह भी है कि, सभी मानव जाति की रक्षा-उसकी भलाई के लिए सोचें। ऐसा हो भी रहा है, यह संतोष का विषय है। चलिए, साथ आएँ इस नए सामान्य को सफल और मानव जाति को सुरक्षित बनाएँ।

पुत्री – श्री चित्रंजन पती
सहायक महाप्रबंधक (परियोजना)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



नौ बजे नौ मिनट: ब्लैक आउट

अखिल कुमार

प्रधानमंत्री ने देश के नाम संदेश में सभी देशवासियों से कोरोना के खिलाफ एकजुटता प्रदर्शित करने के लिये 5 अप्रैल (2020) की रात को अपने घरों की लाइट 9 बजे से 9 मिनट के लिये बन्द रखने और अपनी बालकनी में खड़े हो कर दीया या कैंडल जलाने की अपील की। यूंतो इस अपील का अनुपालन करना देशवासियों के लिये ऐच्छिक कार्य था पर इस से जुड़ी समस्या एक अनिवार्य अभियान्त्रिकी चुनौती थी। नौ मिनट के उस अवधि में बिजली की खपत एवं आपूर्ति में आने वाली विसंगति को सफलता पूर्वक वहन करना पावर प्लांट अभियंताओं के लिये एक अभूतपूर्व चुनौती थी। जिसमें ना सिर्फ तकनीकी बल्कि संगठनात्मक कार्य में भी अवल प्रदर्शन की जरूरत थी।

इस अपील के बाद लोगों में चर्चा थी की कहीं इस ब्लैक आउट के दौरान जुलाई 2012 की तरह ही ग्रिड ठप्प ना हो जाए। जुलाई 2012 में ग्वालियर-आगरा ट्रांसमिशन लाईन में गड़बड़ी हुई थी जिसके कारण पहले दिन नॉर्डन और ईस्टर्न ग्रीड ठप्प हुआ अगले दिन नार्थ-ईस्टर्न ग्रीड ठप्प हो गया। बिजली से चलने वाली सारी व्यवस्था ठप्प हो गयी। जिससे लगभग 60 करोड़ लोग प्रभावित हुए। रेलगाड़ियाँ बीच रास्ते में ही रुक गयीं, कारखानों में बिजली आपूर्ति नहीं होने से उत्पादन बन्द करना पड़ा। हालात ऐसी थी कि कई जगह पर थर्मल पावर प्लांट के स्टार्टअप के लिये भूटान से बिजली लेना पड़ा। नालको के एटीव पावर प्लांट जैसे एक दो अपवाद को छोड़कर सारे थर्मल पावर प्लांट ट्रिप हो गये थे।

5 अप्रैल के ब्लैक आउट को लेकर लोग अपने स्तर पर भी किसी तरह की अनहोनी से बचने के लिए सुझाव देने लग गये थे। जैसे एक सुझाव आया कि बल्ब ऑफ करने के साथ कोई और उपकरण चला दो। इन तमाम आशंकाओं को दूर करने के लिये 3 अप्रैल को ऊर्जा मंत्रालय ने एक विज्ञप्ति जारी कर जनसाधारण को आश्वस्त किया कि हमारा पावर यूटिलिटी ग्रिड सिस्टम किसी भी अनहोनी से निपटने के लिये पूरी तरह से सक्षम एवं तैयार है।

विदित है कि बिजली का भंडारण नहीं किया जा सकता अतः

अगर कहीं बिजली का उत्पादन हुआ है तो उसकी खपत भी होनी है। बिजली की खपत एवं आपूर्ति को सामान्य रखने के लिए राज्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर लोड डिस्पैच सेन्टर है। लोड डिस्पैच सेंटर 15 मिनट के ब्लाक समय अवधि में बिजली की खपत एवं आपूर्ति का लेखा जोखा रखती है। बिजली की संभावित खपत एवं उससे संबंधित भविष्यवाणी करने और ग्रिड के एकीकृत संचालन की जिम्मेदारी पावर सिस्टम अप्रेसॉन कॉर्पोरेशन (पोसोको) के ऊपर है। पोसोको ने सभी लोड डिस्पैच सेन्टर और ग्रिड यूटिलिटी कंपनी को ब्लैक आउट से संबंधित दिशानिर्देश पहले ही जारी कर दिया था।

बिजली की आपूर्ति एवं खपत के विसंगति से वोल्टेज और फ्रिक्वेंसी पर विषम प्रभाव पड़ता है। बिजली की खपत आपूर्ति से कम होने पर फ्रिक्वेंसी में बढ़ोतरी होती है। फ्रिक्वेंसी बैंड में अत्यधिक भटकाव होने से ट्रांसमिशन लाईन में गड़बड़ी या ट्रांसफॉर्मर ठप्प होने की संभावना बढ़ जाती है। केंद्रीय विद्युत नियामक प्राधिकरण ने ग्रिड के सामान्य संचालन के लिये 49.95 से 50.05 हर्ट्ज का फ्रिक्वेंसी बैंड निर्धारित किया है। ब्लैक आउट के दौरान भी फ्रिक्वेंसी बैंड के भटकाव को संतुलित रखने की चुनौती अभियंताओं के समक्ष थी।

देश की बिजली उत्पादन में थर्मल पावर का योगदान 60% के आसपास है वहीं 14% हाइड्रो और 7% गैस का है। इनमें से थर्मल पावर प्लांट में न्यूनतम से अधिकतम लोड लाना सहज कार्य नहीं होता इसमें कभी-कभी घंटों लग जाते हैं। इनकी तुलना में हाइड्रो पावर प्लांट को दो से तीन मिनट में न्यूनतम से अधिकतम लोड पर लाया जा सकता है। बिजली के खपत एवं आपूर्ति में उतार चढ़ाव को संतुलित करने के लिये प्रायः डिस्पैच सेन्टर मुख्यतः हाइड्रो पावर प्लांट का उपयोग करती है।

5 अप्रैल को 20:45 तक हाइड्रो पावर का ग्रिड में योगदान बढ़ा कर अधिकतम स्तर तक कर दिया गया। फिर 20:45 से जैसे ही खपत कम होना शुरू हुआ पहले थर्मल पावर की

बिजली उत्पादन में कटौती की गयी फिर हाइड्रो पावर एवं गैस पावर को न्यूनतम पे लाया गया फिर 21:10 से जैसे ही खपत बढ़ना शुरू हुआ हाइड्रो एवं गैस पावर के ग्रिड में योगदान को तेजी से बढ़ा कर अधिकतम स्तर पे ले जाया गया। उसके बाद थर्मल पावर की बिजली उत्पादन को भी बढ़ाया गया। इस प्रक्रिया में विंड पावर प्लांट की भी जरूरत अनुसार भागीदारी तय की गई।

20:45 से 21:10 के बीच बिजली खपत में 31089 मेगावाट की गिरावट आयी जिसको संतुलित करने के लिए समयानुसार 17543 मेगावाट हाइड्रो, 10950 मेगावाट थर्मल और 2007 मेगावाट विंड पावर में बिजली के उत्पादन में कटौती की गयी और फ्रिकेंसी बैंड के विस्तार को एक सुरक्षित सीमा में सीमित रखा गया। अधिकतम एवं न्यूनतम ग्रिड फ्रिकेंसी 50.26 और 49.707 हर्ट्ज दर्ज किया गया।

पावर प्लांट अभियंताओं के सजग प्रयास से प्रधानमंत्री के आह्वान का सफलतापूर्वक निर्वहन किया गया। जिस समय देश के लगभग तमाम नागरिक दीया जलाकर कोरोना के खिलाफ एकजुटता का प्रदर्शन कर रहे थे उसी समय देश के विभिन्न पावर प्लांट, डिस्पैच सेन्टर, ग्रिड यूटिलिटी सेन्टर में कार्यरत अभियंतागण ब्लैक आउट की इस अभियान्त्रिकी चुनौती का सफलतापूर्वक संगठनात्मक तरीके से सामना कर रहे थे।

आश्वर्य न होगा अगर आने वाले समय में किसी आपदा प्रबंधन के लिए टीम वर्क के इस मिशाल को उदाहरण के तौर पर पेश किया जाए।

सहायक प्रबंधक (परियोजना (पी.एच))
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
अनुगुल

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिंदी।

— रवीन्द्रनाथ ठाकुर



कोरोना

श्लेषा शंकर

आज पूरे विश्व पर छाया डर का साया है,
सभी अपने घरों में छिपे पड़े हैं,
क्योंकि कोरोना महामारी आया है।

चीन के बुहान से निकल यह पूरे विश्व में छाया है,
हर और तबाही और डर का साया है।

इस कोरोना ने लाखों लोगों की समाधि ले ली है,
शवों सदों में इसने महामारी की उपाधि ले ली है।

इससे बचने के लिए हमें अधिक सावधानियाँ बरतनी हैं,

मुंह पर मास्क, हाथों पर सेनेटाइजर और,
6 फीट की दूरी रखनी है।

बार-बार हाथों को 20 सेकेण्ड तक धोना है,

जब तक ज्यादा जरूरी न हो,

घर से नहीं निकलना है।

उम्मीद है कि हम जल्द ही इसकी वैक्सीन बना लेंगे,

और पूरी दुनिया को इस महामारी से बचा लेंगे।

पूरी दुनिया के लोग

फिर से दिल खोल कर मुस्कराएंगे,

सारे डर को दूर भगा, सबको गले लगाएंगे।

पुत्री – श्री विजय शंकर प्रसाद

वरिष्ठ प्रबंधक, प्रद्रावक

अनुगुल



दृष्टिकोण

बि. सुजया लक्ष्मी

आजकल के बालक तथा बालिकाओं की दृष्टि अति अपवित्र है, यह मैं नहीं कह रही हूँ। किसी महापुरुष की वाणी है। जो मैं एक मैगाजिन में पढ़ी थी, दृष्टि अपवित्र होने से मन भी विचलित हो जाता है। मन विचलित होकर कुकर्म में लिप्त होता है। हम अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में टी.वी., अखबार में तथा अपने आस पास भी देखते तथा सुनते आये हैं कि कभी किसी बच्ची को मारा डाला, तो किसी बहु को दहेज के लिए जला डाला, कोई शराब पीकर माँ, बाप को पीटा, तो कोई गाड़ी से एक्सीडेन्ट करके मरा आदि.....

कोई भी नहीं सोचता, इन सब कर्मों के पीछे, क्या कारण है? सब बोल देते हैं, कर्मों का फल है। प्रारब्ध है, पर यह आधा सच है। मेरी मानो तो ये प्रारब्ध कम, मौजूदा कर्म का फल ज्यादा है। मनोविज्ञान कहता है, जैसा खान पान वैसी तुम्हारी सोच, और जैसे सोचते हैं, वैसा ही हम काम करते हैं।

बच्चे अपने माँ, बाप को देख देख कर सीखते हैं। जो माँ बाप योग्य होते हैं, उनके बच्चे सामाजिक बन पाते हैं। पैरेन्टिंग (Parenting) ये शब्द छोटा है, पर अपने अंदर एक बड़ा रहस्य छुपा रखा है। हम एक मनोवैज्ञानिक सेमिनार में उपस्थित हुए थे। वहाँ एक प्रोफेसर कह रहे थे कि खाना बनाने के लिए 3 साल का कोर्स होता है - होटल मैनेजमेंट घर, सड़क बनाने की विधि भी तीन साल पढ़ाई करके सीखा जाता है, वगैरह-वगैरह.... ऐसे ही बहुत कुछ सालों साल पढ़ाई करके सिखाते हैं, तथा बनाते हैं, पर इंसान बनाने की कहीं कोई मशीन या कोर्स आज तक बनाई नहीं गयी है। होते होते बच्चे पैदा भी हो जाते हैं, और बढ़ते बढ़ते अपने आप कुछ बन जाते हैं।

अच्छे बच्चे बन गए तो माँ बाप क्रेडिट लेते हैं। हमारी परवरिश का नतीजा पर वही बच्चा निठल्ला या बुरा बन गया तो नतीजा माँ बाप की परवरिश का नहीं देश समाज का।

आज समाज में हम, भाव की कमी देखते हैं सब भौतिक सुख की कामना रखते हैं, मानव सामाजिक प्राणी है। उसके अंदर मानवीय लक्षण दया, क्षमा, ध्यार सेवा आदि होने चाहिए। पर समय बदल चुका है, हम खाना जिस भाव से बनाते हैं। खाना वही भावना खाने वाले के अंदर तैयार करते हैं।

पहले जैसे समाज बनाने के लिए, सब को कोशिश करनी

पड़ेगी, यानी सबसे पहले परवरिश (Parenting) सीखाना होगा। अपना खान पान, सोच, कर्म सब कुछ बदलना पड़ेगा। सबसे जरुरी अपनी शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाना होगा। वैश्विक शिक्षा के साथ साथ आध्यात्मिक शिक्षा का प्रचलन होना जरुरी है।

आध्यात्मिक शिक्षा ही सर्वोच्च शिक्षा है, ये भगवद् गीता में कहा गया है। छात्र या छात्रा के परिणाम से ज्यादा गुण महत्वपूर्ण है। शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, यह कर्म की अर्तभूक्त है।

इन्सान कहीं भी किसी भी पद पर हो, अगर शान्ति धन उसके पास नहीं तो उस पद की क्या उपयोगिता? प्रशान्त चित्त ही मनुष्य का गहना है। आध्यात्मिक प्रयास और साधना से ही भगवान संतुष्ट होते हैं।

एक छोटी कहानी की उपस्थापना करके मैं लेख को खत्म करती हूँ..

एक इन्सान बहुत ज्यादा क्रोध, लोभ आदि गुणों से परिपूर्ण था। एक दिन वह पास के एक आश्रम में गया। साधु से बोला, क्या आप मेरे सब दुर्गुणों को ठीक कर सकते हैं? साधु बोले देखो, अभी तुम्हारी जिन्दगी सिर्फ आठ दिन रह गयी है। तुम्हे ठीक होकर भी क्या फायदा? आदमी अपनी मौत हो जाएगी सुनकर वहाँ से चुप-चाप चला गया। सोचते सोचते वह अपने आस-पास के लोगों से अपने बुरे व्यवहार पर माफी माँगने लगा। अपने परिवार में प्यार से रहने लगा। ऐसे आठ दिन गुजर गये, साधु उसके घर आये। उससे पूछा अब तुम्हारा बर्ताव कैसा है? आदमी बोला बहुत अच्छा लग रहा है, और जीने की चाह है। पर क्या करूँ, मैं तो मरने वाला हूँ। साधु बोले, तुम अभी-अभी जिन्दा हुए हो। पहले मरे हुए थे। इन्सान को इन्सान के साथ इन्सान जैसे ही रहना चाहिए।

अब तुम नहीं मरोगे। खुश रहो और दूसरों को खुशी दो।

ये पढ़ने के बाद जो मैंने सबको समझना चाहा शायद ही कोई समझ पाएगा। सभी अपने-अपने दृष्टिकोण से ही अलग-अलग अर्थ समझेंगे।

वरिष्ठ तकनीशियन, प्रद्रावक
अनुग्रुळ



प्रतिरोधक क्षमता (इम्यून सिस्टम)

रजनीश कुमार गुप्ता

कोरोना वायरस महामारी के बीच सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाला शब्द इम्यून सिस्टम है जिसे रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कहते हैं। प्रतिरोधक क्षमता का काम शरीर को किसी बाहरी तत्व जैसे वायरस, बैक्टीरिया, परजीवी या बीमार करने वाले कारकों से बचाव करना होता है। इसके अलावा यह शरीर की स्वस्थ कोशिकाओं को संक्रमित कोशिकाओं से अलग करने का काम करता है। जिससे शरीर पर वायरस या किसी दूसरे हानिकारक तत्व का असर नहीं हो पाता है या यह कहें कि उसे हावी होने से पहले काफी समय तक रोकता है।

- प्रतिरोधक क्षमता को आमतौर पर दो भागों में विभाजित किया जाता है।

1) प्राकृतिक इम्यूनिटी

शरीर के भाग जैसा त्वचा, पेट एसिड, एंजाइम, त्वचा का तेल, म्यूकस और खांसी रोग प्रतिरोधक तंत्र के रूप में काम करते हैं। इनका काम शरीर में घुसने की कोशिश करने वाले किसी बाहरी तत्व को रोकना होता है। इसके अलावा इन फेरौन और उसके इंटरल्युकिन-1 नाम के रसायन भी हानिकारक तत्व को खत्म करने का काम करते हैं, जिससे शरीर सुरक्षित रहता है। हाँ, यह जरूर है कि प्राकृतिक इम्यूनिटी से आप पूरी तरह सुरक्षित हैं, इसकी कोई गारंटी नहीं है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह इम्यूनिटी का पहला चरण होता है। जिससे शरीर के हिस्से वायरस को भीतर जाने से रोकते हैं।

2) अडॉस्ट्रिव इम्यूनिटी

शरीर के भीतर जब कोई वायरस बैक्टीरिया शरीर में प्रवेश कर अपनी संख्या बढ़ाने की कोशिश करता है तो अडॉस्ट्रिव इम्यूनिटी सक्रिय होती है। वायरस या बैक्टीरिया स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाता है तो शरीर उनके खिलाफ एंटीबॉडीज बनाता है और उस तत्व को खत्म करने की प्रक्रिया शुरू कर देता है। जब वायरस या खतरनाक

वाहक खत्म हो जाता है तो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता उसे याद कर लेती है और जब वह कभी दोबारा हमला करता है तो उसे समय रहते निष्क्रिय कर देता है।

इम्यूनिटी के अहम भाग, जो हर तरह की बीमारी से बचाने में अहम भूमिका निभाती

लिंफनोड्स: छोटे आकार का होता है और कुछ हद तक किडनी जैसा दिखता है। इसका काम कोशिकाएं बनाना और उन्हें संरक्षित करना होता है, जो किसी संक्रमण या बीमारी से लड़ने का काम करती है, जो लिंफेटिक सिस्टम के अंतर्गत आता है। लिंफनोड में द्रव होता है, जो कोशिकाओं को शरीर के अलग-अलग हिस्से में पहुंचाने का काम करता है। शरीर जब संगठनों से लड़ता है तो लिंफनोड का आकार बड़ा हो जाता है और अधिक से अधिक में हानिकारक तत्व को दूसरे भागों में फैलने से रोकता है।

स्लीन: शरीर का सबसे बड़ा लिंफेटिक अंग होता है, जो पसलियों के नीचे और पेट के ऊपर बायीं और होता है। इससे सफेद रक्त कोशिकाएं होती हैं, जो शरीर में मौजूद संक्रमण और बीमारियों से लड़ने के साथ ही रक्त का पैमाना भी संतुलित करता है। पुराने और खराब रक्त कोशिकाओं को निष्क्रिय भी करता है।

बोन मैरो: शरीर में मौजूद हड्डियों के बीच में पाए पाया जाने वाला पीला ऊतक बोन मैरो होता है इसका काम सफेद रक्त कोशिकाओं का उत्सर्जन करना होता है। हड्डियों के बीच में कुछ नरम ऊतक होते हैं। खासतौर पर हिप और थाई बोन में, जिसमें पूरी तरह परिपक्व नहीं हुई कोशिकाएं होती हैं, जिन्हें स्टेम सेल्स कहते हैं।

लिंफोसाइट्स: यह छोटी सफेद रक्त कोशिकाएं होती हैं जो शरीर की बीमारी से बचाने में भूमिका निभाती है। इसमें पहली बी सेल्स जो एंटीबॉडीज बनाकर बैक्टीरिया और विषैले तत्वों को खत्म करती है। दूसरे की कोशिकाएं होती हैं जो संक्रमित कोशिकाएं और कैंसरग्रस्त कोशिकाओं को

खत्म करती है। इसी तरह हेल्पर की कोशिकाएं होती हैं जो यह पता करती हैं कि कौन सी प्रतिरोधक क्षमता ने किस पैथोजन के लिए काम करना शुरू किया है।

थायमस: यह छोटा सा ही कोशिकाओं को परिपक्व बनाता है। इसका काम एंटीबॉडी और संतुलन बनाना है। जिसके कारण मांसपेशियों में कमजोरी महसूस होती है। विशेषज्ञों के अनुसार उम्र बढ़ाने के साथ यह छोटी होती हैं लेकिन अपना काम करती हैं।

ल्यूकोसाइट्स: यह एक कोशिका होती है जिसका निर्माण बोन मैरो में होता है और रक्त के साथ लिंफ टिशु में मिलती है। यह इम्यूनिटी का एक हिस्सा है, जो संक्रमण और बीमारी की चपेट में आने पर शरीर को बचाती है।

वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
अनुगुळ



सीख

स्वाती तिवारी

वक्त बदलता है बदलता हर ज़रा हर कोना ।
ये बात एक बार फिर हमें सिखा गया कोरोना ॥
लाशें पड़ी थीं सड़कों पर पर एक आंख ना रोया ।
वही तो काटा है हमने जो बरसों तक था बोया ॥
लोग वापस आने लगे फिर अपने गांवों की ओर ।
अपने ही देश में प्रवासी बन किसे रास आएगा भूखा सोना ॥
ये बात एक बार फिर हमें सिखा गया कोरोना ॥।।।

हम दीवारों में कैद हुए और आजाद हो गए जानवर ।
जिनके आशियाने छीन कभी बनाए थे हमने अपने घर ॥।।
नदियों का जल साफ हुआ घट गया प्रदूषण ।
अब चिड़ियों की चहचाहट भी सुनाई देने लगी है अमूमन ॥।।
प्रकृति सजी फिर नयी दुल्हन की तरह ।
जिसे हमारी वज़ह से बन विधवा पड़ रहा था रोना ॥।।
ये बात एक बार फिर हमें सिखा गया कोरोना ॥।।।

शेक हैण्ड की प्रथा में था नमस्ते को हमनें खोया ।
घर का खाना भूल कर फास्ट फूड को हमनें ढोया ॥।।
महत्वाकांक्षाओं के लिये अपनों से हम दूर हुए ।
आधुनिक उपकरणों के बीच ज़ीने को मजबूर हुए ॥।।
पर हमारी संस्कृति ही सर्वोत्तम है इसे नहीं अब खोना ।।
ये बात एक बार फिर हमें सिखा गया कोरोना ॥।।।

अधिकतम की चाह में चीन ने स्वयं को त्रस्त किया ।
सर्वशक्तिमान अमेरिका भी नियति के हाथों पस्त हुआ ॥।।
इटली को मंहगा पड़ा जीवन को हल्के हाथों लेना ।।
विकसित देशों को भी पड़ रहा है जैसे तैसे अपनी नैया खेना ॥।।
किन्तु प्रकृति के आगे समस्त संसार है बौना ।।
ये बात एक बार फिर हमें सिखा गया कोरोना ॥।।

पत्री – श्री अखिल कुमार
सहायक प्रबंधक, (परियोजना (पी.एच))
ग्रहीत विद्युत संयंत्र, अनुगुळ



दिसंबर 1992 की काली रातें

चिरंतन श्याम

बचपन के कुछ दिन भुलाये नहीं भूलते। हर वर्ष दिसंबर के कुछ दिन बार बार उन यादों को आँखों के सामने आ जाते हैं। सन् 1992 में 12 वर्ष का था। मैं हिंदूवादी संस्था द्वारा संचालित विद्यालय में पढ़ता था। भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म की महानता विद्यालय द्वारा हमारे मस्तिष्क में भरी जा रही थी। हमें विद्यालय से ही राम मंदिर, उस पर बनी मस्जिद और हिंदुओं पर हुए अत्याचार के बारे में बताया जा रहा था। लेकिन मेरा सबसे प्रिय मित्र मेरा पड़ोसी मुस्लिम लड़का था। मेरा परिवार उनके साथ ईद और उनका परिवार मेरे परिवार के साथ दीपावली मनाता था।

आज 5 दिसंबर 1992 की दोपहर है। स्कूल से लौटते समय शहर में कुछ बेचैनी थी। लोग अयोध्या जाकर कारसेवा करने की बात कर रहे थे। कारसेवा का लक्ष्य बाबरी मस्जिद गिराना था। सुनने में अच्छा लग रहा था। शहर की आबादी आधी हिन्दू और आधी मुस्लिम थी। कुछ मोहल्ले हिन्दू बाहुल्य थे तो कुछ मुस्लिम बाहुल्य। शहर में तनाव चरमोत्कर्ष पर था। घर पहुँचने पर ममी पापा ने बताया कि कल 6 दिसंबर स्कूल बंद रहेगा। हम तो खुश थे पर पता नहीं क्यों सब परेशान होकर टीवी और रेडियो से चिपके थे। खबर आ रही थी कि हज़ारों हिन्दू मस्जिद तोड़ने के लिए अयोध्या में पहुँच गए हैं। पुलिस से झड़प में कुछ घायल, तो कुछ गिरफ्तार भी हुए थे।

धीमे धीमे रात बीत गयी और फिर आयी 6 दिसंबर की सुबह। लोग सुबह से टीवी और रेडियो पर समाचार सुन रहे थे। पूरे शहर में धरा 144 लागू हो चली थी। स्कूल ऑफिस, बसें इत्यादि सब बंद थी। हम बच्चे सुबह से कॉलोनी में क्रिकेट खेल रहे थे। दोपहर को खबर आयी की बाबरी मस्जिद गिरा दी गयी है। टीवी पर उसके वीडियो दिखाए जा रहे थे। तभी खबर आती है की शहर में खून खराबा शुरू हो गया है। कुछ मुस्लिम लड़कों ने एक हिन्दू जज को मिस्टनगंज चौराहे पर मार दिया था। लोग ऑफिस, दुकान छोड़ कर घर भाग रहे थे। बाज़ार बंद हो रहे थे। पूरे शहर में भगदड़ मची थी। पुलिस भी अपनी जान बचने के लिए चौकी

की तरफ भाग रही थी। हमारी कॉलोनी के कुछ लोग घर अभी तक नहीं आये थे। सुरक्षा के लिए कॉलोनी का दरवाजा बंद कर दिया गया था। तभी कॉलोनी के कुछ मुस्लिम परिवार कॉलोनी छोड़ अपने रिश्तेदारों के यहाँ जाने लगे। हमारी कॉलोनी शहर की सीमा से सटी थी। शहर में दंगे अपना विकराल रूप ले चुके थे।

धीमे धीमे रात धिर आयी थी। रात का खाना जल्दी बन गया था। घर की खिड़की, दरवाजा, रोशनदान बंद कर दिए थे। मुख्य द्वारपर लकड़ी का बेड लगा दिया गया था। उस पर सन्दूक और कुर्सी -मेज़ रख दिए गए थे। आमतौर पर शाम होते शांत होने वाला शहर आज चिल्ला रहा था। कभी "अल्लाह ओ अकबर" तो कभी "जय श्री राम" के नारे सुनाई थे। गोली और बम धमाकों की आवाज़ रह रह के आ रही थी। शहर में कर्फ्यू लग चुका था। पूरा शहर पुलिस की गिरफ्त में था। लेकिन गली मोहल्ले में हिंसा फैली थी। उस रात मैं घर की महिला सदस्यों के साथ घर के अंदर था। रात 1 बजे शहर के शांत होने पर हम भी सो गए।

सुबह हो चुकी थी। सब लोग उठे थे। हम शहर की सीमा पे थे। कर्फ्यू हमारे बाद में था। सब्ज़ी, दूध, अखबार हमारी कॉलोनी तक आ रहा था। अखबार में लाशों की फोटो और मस्जिद गिरने की फोटो भरी थी। लाशें सड़कों पर, नालों में, गली में भरी हुई थीं। छत से शहर की ओर देखने पर चारों तरफ पुलिस और पुलिस की गाड़ी दिखाई दे रही थी।

दिन चढ़ने लगा, लोग टीवी पर समाचार सुन रहे थे। दंगे शहर में ही नहीं पूरे देश में फैल गए थे। हम बच्चे बाहर खेल रहे थे। तभी बाहर शोर हुआ। छत पर गए तो देखा की शहर में पुलिस की गाड़ी फ्लैग मार्च कर रही थी। लोगों को घर में रहने को कहा जा रहा था। पुलिस की एक टीम कॉलोनी के बाहर शहर की सीमा पर खड़ी थी। ताकि कोई शहर के अंदर या बाहर न जा सके।

तभी कॉलोनी के बड़े लोग पथर इकट्ठा करने लगे और हम उनको छत पे ले जाने लगे। छत पर चाकू लाठी, भाला पथर

इत्यादि इकट्ठा किया गया। कॉलोनी में मीटिंग होने लगी। तय किया गया कि सारे पुरुष छत पर रहेंगे और महिलाएं घर में रहेंगी। घर के दरवाजे अंदर से बंद रहेंगे। औरतें सुरक्षा के लिए लाल मिर्च पाउडर रखेंगी और कपड़ों में चाकू छिपाएंगी। पानी और लाल मिर्च पाउडर छत पे भी रहेंगे। मुख्य द्वार पर कील गाड़ कर बिजली के नंगे तार लगा दिए गए। शाम को 6 बजे हम खाना, पानी, रजाई, कम्बल इत्यादि लेकर छत पे चले गये। महिलाओं को घर में बंद कर दिया गया।

6 बजे फिर रात शुरू हुई और आज की रात मैं छत पर था। छत पर मैं, मेरा परिवार, मेरा दोस्त और उसका परिवार था। और फिर मैंने उस रात देखा मौत का नंगा नाच। आसमान की काली छाती को चमकती हुई बन्दूक की गोलियों की लकीरें पार कर रही थी। हम सभी छत की छोटी चार दीवारी से गर्दन निकल कर मौत की आसमानी दीपावली को देख रहे थे। कभी "अल्लाह ओ अकबर" का शोर आता और बम फटता। धूँए और चिंगारी का गुबार छा जाता। फिर "जय श्री राम" के नारे लगते और बम फटता और गोली चलती।

तभी कुछ दंगाई तलवार, तमच्चे, मशीनगन इत्यादि लेकर गोली चलाते हमारी कॉलोनी की ओर बढ़े। हम सबके प्राण सूख गए। सभी लोग पत्थर लेकर तैयार हो गये। तभी पुलिस ने हवाई फायर किया। तो सरे दंगाई वापस लौट गये। धीमे धीमे रात साँसे थामे बीतती गयी और रात के एक बज गए। सबने ठण्डा खाना खाया और एक एक करके सो गए।

इस तरह चार दिन डर के साथे मैं बीत गए। फिर कर्पूर खत्म हुआ। स्कूल, कॉलेज खुल गए। स्कूल जाते समय हमने देखा कि लाशें अभी भी नालियों में सड़ रहीं थीं। कीड़ों ने लाशों की आँखे खा ली थीं। जगह जगह लकड़ी की जाली टुकानें, टूटे दरवाजे, जली कार, मोटरसाइकिल पड़ी थीं। स्कूल से लौटते समय शहर थोड़ा साफ़ हो चुका था। जनाज़े और शवयात्रा दोनों निकल रहे थे। पुलिस चारों तरफ खड़ी थी। अधिकतर जनाज़े दो - तीन साल के बच्चों के थे जिन्हें उनके पिता अकेले उठा के ले जा रहे थे। शायद कर्पूर में भूख प्यास, और बिना दवा के मर गए थे।

आज राम मंदिर केस का सुप्रीम कोर्ट से फैसला आ गया है और सबकुछ शांत हो गया है। लेकिन हर साल दिसम्बर के महीने में दिसंबर 1992 की काली रातें याद आ जाती हैं।

प्रबंधक (यांत्रिक)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
अनुग्रह



जानवर बेजुबान नहीं बदजुबान इंसान है !

गिताझली रथ

बेजुबान क्यों कहते हो उनको ?

जुबान तो उनकी भी होती है!

हम न समझ पाते हैं उनको,

तो ये विवशता हमारी है।

जुबान कहो या भाषा-भाव की अभिव्यक्ति ही है।

और भाव उनका हमसे बेहतर है,

क्योंकि अपनों से परे भी उनको,

कभी समझ में आते हैं।

खुद को सबसे बेहतर समझने वाला ए इंसान।

भावों के अभाव में सिर्फ अपने को व्यक्त कर

किस अभिमान से बनता है महान?

अगर भाषा का अभिमान है,

तो बिनु भाव वह प्रलाप है।

जानवर बेजुबान नहीं,

आज बदजुबान इंसान है।

शिक्षिका
डीपीएस, दामनजोड़ी



देखो शुरू हो गई रेल

संगीता प्रसाद

तेरी राह तके ये नैन
मन आकुल मूक हैं बैन
हुए एक, दिन और रैन
दिल मिलने को बेचैन।
देखो शुरू हो गई रेल, अब तो आ जाओ।
ले छुट्टी, डाल के मेल, अब तो आ जाओ॥

बट सावित्री को नहीं आये
जा रही मेहदी मुरझाये
व्रत तोड़ी मैंने रख तस्वीर
काट तुम दुश्मन का सिर,
माँ की वेदी पर चढ़ाओ और आ जाओ,
देखो शुरू हो गई रेल....

विरह वेदना से व्यथित
कई रातों से जागूँ मैं नित
मिलन-आस में ओत-प्रोत
बैरी लगे जुगनुओं के ज्योत,
रातें लगने लगीं सौत अब आ जाओ।
देखो शुरू हो गई रेल....

निस्तब्ध, नीरव, निरही रातें
बिरही स्वर में झींगुर गाते
शिशिर श्यामल ये स्याह निशा
फैलाये कालिमा चारों दिशा,
बरसने लगी विरहिन बरसात आ जाओ।
देखो शुरू हो गई रेल....

तुम आओगे, गम जायेगा
नैराश्य जलेगे, तम जायेगा
हारेगी ये अंधियारी कालिमा
फैल जाएगी स्वर्ण लालिमा, औ
लेकर बस फूलों की लड़ियाँ आ जाओ।
देखो शुरू हो गई रेल....

पत्नी – श्री विजय शंकर प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक, प्रद्रावक
अनुगुळ

वक्त

आयशा अहद

आज अच्छा है मेरा वक्त,
कल बुरा था मेरा वक्त।

वक्त है बहुत बलवान,
वक्त की मार झेल रहा इंसान।

वक्त हर जछम का है इलाज,
वक्त ही देता है हर जवाब।

किसने दिये वक्त को इतने नाम,
उसको तो नहीं किसी से कोई काम।

बुरे वक्त में क्या है वक्त का कसूर?
या किसी ने जाना ये कर्मों का है फितूर।

वक्त तो बस एक पल से दूसरे पल
और आज से कल में चला जा रहा है।

वो तो इन्सान है जो उसे
नित नये नाम दिये जा रहा है।

वक्त एक खामोश आवाज है,
जिसने सुन ली वही कामयाब है।

तुम्हारे दिये गये नगमों से न, वो डरे न रुके,
इन सभी परिचयों से वो है परे।

करता है वक्त बस मेरे साथ चले चलो
हर पल का कीमती मान के गलतियों से सीख लो।

पत्नी – श्री मो. फरीद
महाप्रबंधक (प्रक्रिया नियंत्रण) - प्रभारी
एल्यूमिना परिशोधन
दामनजोड़ी



कोविड-19

(कोरोना वायरस दिसंबर -2019)

अनुराधा पटनायक



कोरोना-प्रधान मंत्री जी का सन्देश ““कोई रोड पर न आना””।

लॉक डाउन-लॉक डाउन। चारों ओर खामोशी। दूर दूर तक न बच्चों का शोर, न ही किसी गाड़ी की आवाज चारों ओर शांति ही शांति।

लॉक डाउन शुरू हुआ। जिंदगी में लॉकडाउन का शब्द शायद ही सुना। समझ मे नहीं आ रहा था क्या करें। लेकिन जैसे जैसे दिन बीतते गये, तब लगने लगा लॉकडाउन (सुनहरा मौका) को खोना नहीं चाहिये। कुछ तो करना चाहिये। धीरे धीरे लॉकडाउन का महत्व समझ में आने लगा और हमने स्वयं को कुछ न कुछ कामों में व्यस्त रखना शुरू किया। न ऑफिस का काम, न कोई ऑफिस का टेंशन।

वर्क फ्रॉम होम

हमें लॉक डाउन के समय अपने परिवार के साथ बहुत दिनों के बाद सब साथ मे बैठकर, एक दूसरे के साथ मिलकर, बातचीत कर, नाच-गाना मस्ती कर समय व्यतीत करने का मौका मिला। इसमे से मुझे सबसे अच्छी बात अपने परिवार के साथ बैठकर खाना खाना लगा, जिसे की हम कई अर्सें से भूल चुके थे और फिर शायद ही ऐसा मौका अपनी जिन्दगी कभी आए। फिर शुरू हुआ घर के साफ सफाई का काम। जो काम हम अपनी बाई से करवाते थे, उस काम को हमने संभाल लिया। मालूम पड़ा घर का काम करने मे कितना मजा आता है। खूब मजा आ रहा था अपने काम को स्वयं करने में। तरह तरह के पकवान सीखने का मौका मिला। ऑनलाइन पेंटिंग क्लासेज से पेंटिंग करना सीखा। योग क्लासेज ऑनलाइन अटेंड करना शुरू किया। दूरदर्शन मे रामायण और महाभारत देखने का मजा ही कुछ और था कॉलेज के दिन याद आ गये। हमारे बुजुर्ग जिस चीज को हमें समझाते समझाते थक गये अकेले करोना ने चंद दिनो मे हमें सब सीखा दिया। फिर पता नहीं कैसे दिन कटते गए मालूम ही नहीं पड़ा और अपनी दिनचर्या ही बदल गयी।

लेकिन “दो गज दूरी” का मंत्र कभी नहीं भूलना।

वरिष्ठ लेखाकार (वित्त)
पत्तन सुविधाएँ, विशाखपट्टणम

क्या है करोना?

सना फ़रीद

कोई कहता है जीव से फैला
एक रोग है यह।
किसी ने कहा नहीं वैज्ञानिकों का,
एक प्रयोग है यह
ज्योतिष कहते अरे,
धूमते ग्रहों का योग है यह
कभी सुना, कुछ नहीं भाई,
समय का संयोग है यह
जो भी है, हमें एक दूसरे से
दूर करने वाला, वियोग है यह
ऐसा क्यों लगता है मुझे,
जैसे जरूर ईश्वर का प्रकोप है यह
हमें सही राह दिखाने का,
उसका बड़ा आयोग है यह
धरती थम गयी कुछ ऐसे, शायद
हमारे द्वारा किये गए प्रकृति का दुरुपयोग है यह
दूर रह कर भी, मिलकर इसे
हराना है, सही समय का सदुपयोग है यह
परन्तु ऐसे समय भी एक दूसरे
की निंदा करना, मानवता का उद्योग है यह ?
आओ आज प्रण करें, नहीं करेंगे
आरोप प्रत्यारोप।
करोना को हराने का,
हम सब का सहयोग है यह।

पुत्री – श्री मो. फ़रीद
महाप्रबंधक (प्रक्रिया नियंत्रण) - प्रभारी
एल्यूमिना परिशोधन
दामनजोड़ी



'सेल्फ मोटिवेशन' ही सर्वोत्तम 'मोटिवेशन' है

विनय ठाकुर

बेहतर प्रदर्शन एवं उत्कृष्टता के पीछे कई कारक होते हैं जिनकी व्याख्या अभिप्रेरणा (मोटिवेशन) से संबन्धित विभिन्न सिद्धांतों में की गई है। इनमें प्रमुख हैं मक्योगेर का 'एक्स एवं वाई' सिद्धान्त, मासलो - हर्जवर्ग का 'हाइरार्की - हाइजीन' सिद्धान्त, मैक्लेलैंड का 'अचीवमेंट' सिद्धान्त और कुछ अन्य जैसे की 'एक्सपेकटेनसी' सिद्धान्त, 'सेल्फ - डिटरमिनेशन' सिद्धान्त, 'गोल - सेटिंग' सिद्धान्त, 'इक्विटी' सिद्धान्त, इत्यादि। इस विषय पर अभी शोध जारी है और मानव व्यवहार के अन्य विचारकों से भी कुछ नये सिद्धांतों की काफी उम्मीदें हैं। ये सारे सिद्धान्त कई बाहरी एवं आंतरिक कारकों का अभिप्रेरणा या 'मोटिवेशन पर होने वाले प्रभावों के बारे में जानकारी देते हैं। किन्तु, यह भी सत्य है की बाहरी अभिप्रेरकों (मोटिवेटर्स) की अपेक्षा आंतरिक अभिप्रेरक अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह इसलिए क्योंकि जब अभिप्रेरणा का कारक बाहरी होता है, तो अभिप्रेरणा इस कारक की एक प्रतिकृया मात्र होती है तथा किसी भी अन्य प्रतिक्रिया की ही तरह अभिप्रेरणा समानुपातिक एवं पूर्व निर्धारित मात्रा में ही होगी। ऐसे अभिप्रेरणा की अल्पकालिक होने की अधिक संभावना होती है।

इसके विपरीत, जब अभिप्रेरणा मनुष्य के अंदर से ही उत्पन्न हो तो उससे अधिक शक्तिशाली और कुछ भी नहीं हो सकता क्योंकि आंतरिक अभिप्रेरणा सीमाओं से परे होती है। हाल के कुछ नवीन सिद्धान्त आंतरिक अभिप्रेरकों पर ज़ोर देते हैं। बेहतरीन कर्मचारी अधिक वेतन, 'पर्क', पुरस्कार या फिर पीठ थपथपाने या सम्मान, इत्यादि से अभिप्रेरित नहीं होते। बल्कि ये वो लोग होते हैं जिन्हें स्वयं की काबिलियत एवं सर्वश्रेष्ठ होने में अटूट विश्वास होता है। उन्हें अभिप्रेरणा के लिए बाहरी कारकों की कोई आवश्यकता नहीं होती। ये लोग सचमुच स्वयं से ही अभिप्रेरित होते हैं। स्वयं से ही अभिप्रेरित होना एक आंतरिक विशिष्टता है। ये विशिष्टता आनुवांशिक हो सकती है। पर इसे विकसित भी किया जा सकता है। स्वयं से अभिप्रेरित होने की विशिष्टता को विकसित करने के लिए निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

अपनी मान्यताओं (वेल्यूज) को न भूलें

दलाई लामा ने एक बार कहा था, "परिवर्तन के लिए अपनी बांहें खोलें, किन्तु अपनी मान्यताओं (वेल्यूज) को ना छोड़ें।" मान्यताएँ मनुष्य के हृदय की गहराइयों में समाहित होती हैं और अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। मान्यताओं की सूची बहुत लंबी है। इसमें ईमानदारी, सराहना, प्रतिबद्धता, निष्ठा, समर्पण, मित्रता, सच्चाई, आशा, प्रेम, परवाह, आशावाद, धैर्य, सम्मान, त्याग और बलिदान, एकता, दूरदर्शिता, समर्पण, सहनशीलता इत्यादि अनेकों विषय समिलित हैं। जब व्यक्ति अपनी मान्यताओं को अपने कार्य जीवन (वर्क लाइफ) में पा लेता है तब उसे अपनी अभिप्रेरणा सहज रूप से स्वयं अपनी मान्यताओं से ही मिल जाती है।

आपके जीवन का उद्देश्य क्या है?

यद्यपि यह प्रश्न दार्शनिक प्रतीत होता है, तथापि यह प्रश्न हमें अपने आप से पूछना चाहिए। भोजन, मनोरंजन, काम, यात्रा, परिवार – ये सब निस्संदेह बहुत महत्वपूर्ण हैं। फिर भी, जीवन का एक उद्देश्य निश्चित तौर पर होता है जो सभी व्यक्तियों के लिए एक समान नहीं होता। अपने जीवन के उद्देश्य को समझ लेने तथा उसे अपने कार्य जीवन के साथ जोड़ने से मनुष्य अपने कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वतः अभिप्रेरित हो सकता है।

प्रतिबद्धता

असमानताएं, मतभेद, विचार-विभिन्नता इत्यादि समाज और मनुष्य जीवन में चिरकाल से हैं और शायद हमेशा ही रहेंगे। कार्य क्षेत्र की सभी समस्याओं को आसानी से नहीं निपटा जा सकता। चाहे आप कुछ भी करें, बाधाएँ अक्सर आपका रास्ता रोकेंगी। किन्तु यदि आप कार्य के प्रति पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हैं तो कठिन से कठिन बाधाओं से लड़ने की शक्ति आपको अपने अंदर से ही प्राप्त हो जाएंगी। ऐसे में, कठिन परिस्थितियों का सामना करने में और अपना रास्ता निकालने में आप अवश्य सफल होंगे।

असफलताओं को स्वीकार करें

हमेशा पूर्णता की जिद न करें। और हमेशा सफलता की उम्मीद भी न रखें। चाहे आप कितने ही कुशल और प्रतिबद्ध कर्मचारी क्यों ना हों, फिर भी असफलता की संभावना से आप इंकार नहीं कर सकते। यही बात अन्य लोगों पर भी लागू होती है। इसलिए असफलताओं को भी स्वीकार करें – चाहे वे अपनी हों या अन्य लोगों की। याद रखें, असफलताएँ जीवन का एक अभिन्न अंग हैं। महत्वपूर्ण सिर्फ इतना है की आपकी ओर से भरपूर प्रयत्न किया गया हो। अपनी असफलता के कारणों को ढूँढकर इन्हें दूर करने की चेष्टा करें। ऐसा करने से इस बार ना सही तो अगली बार आप बेहतर कार्य कर पाएंगे और आपके सफल होने की पूरी संभावना होगी।

अपने दिल की सुनें

किसी भी विषय पर जब दिल और दिमाग के बीच मतभेद हो, तो जो दिल कहता है, अक्सर वही सही होता है। जब मनुष्य दिल लगा कर काम करता है तो उसका दिमाग उसके वश में होता है और उसका सही इस्तेमाल करना वह जानता है। मनुष्य का दिमाग अत्यधिक शक्तिशाली होता है। यदि यह आपके वश में हो तो यह आपकी समस्याओं को किसी चमत्कार की तरह सुलझा सकता है।

मनुष्य के लिए यह पता लगाना बहुत आवश्यक है की वह अपना कार्य दिल लगा कर कर पा रहा है अथवा नहीं। यदि ऐसा नहीं है तो जो कार्य वह वर्तमान में कर रहा है वह उसके लिए उपयुक्त कार्य नहीं है। ऐसे कर्मचारी को यह पता करना चाहिए की वह कौन सा ऐसा कार्य है जिसे वह दिल लगा कर कर सकता है। उसे वही कार्य करना चाहिए

जिसमें वो अपना दिल लगा सकता हो। जब आप अपना पसंदीदा कार्य करते हैं तो आपका दिल अपने आप उसमें लग जाता है। इसी को 'सेल्फ मोटिवेशन' या स्वयं से अभिप्रेरित होना कहते हैं।

अपने अंदर की अग्नि को पहचानें

हर किसी के जीवन में कुछ-ना-कुछ ऐसा अवश्य होता है जिसके लिए उसके दिल में एक जुनून होता है: क्या है वो? और इस जुनून को वह अपने कार्य के साथ कैसे जोड़ सकता है? उदाहरण के तौर पर, यदि कोई व्यक्ति अधिक सामाजिक एवं संवेदनशील प्रवृत्ति का है और लोगों से मिलना-जुलना पसंद करता है, तो मानव संसाधन विकास (एच०आर०डी.) उसके लिए सही कार्य क्षेत्र हो सकता है। जब कोई जुनून के साथ और अपनी धून में कार्य करता है, तो उसे सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। क्योंकि ऐसे व्यक्ति में बहुत अधिक 'सेल्फ मोटिवेशन' होती है।

'सेल्फ मोटिवेशन' या स्वयं से अभिप्रेरणा के विकास के लिए पहल व्यक्ति को स्वयं ही करनी पड़ती है। परंतु 'सेल्फ मोटिवेशन' के लिए आवश्यक एवं अनुकूल वातावरण को तैयार करने में संस्थाएं अवश्य मदद कर सकती हैं। ऐसे वातावरण में अधिक स्वायत्ता, सहभागिता, खुलापन, पारदर्शिता एवं सामूहिक कार्य पाया जाता है। किसी संस्था के लिए एक 'सेल्फ मोटिवेशन' या स्वयं से अभिप्रेरित व्यक्ति बहुत बड़ी परिसंपत्ति है।

सहायक महाप्रबंधक (मा.सं.वि)
एल्यूमिना परिशोधन
दामनजोड़ी

हिंदी का उद्देश्य यही है, भारत एक रहे अविभाज्य,
यों तो रूस और अमरीका, जितना है उसका जन राज्य।
बिना राष्ट्रभाषा स्वराष्ट्र की, गिरा आप गूँगी असमर्थ,
एक भारती बिना हमारी भारतीयता का क्या अर्थ।

— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त



स्वच्छता की मिसाल : मावल्यान्नांग

मेधा श्रुति

पिछले साल मैं जून के महीने में शिलांग अपने दोस्तों के साथ घूमने गयी थी। हमने गुवाहाटी से एक गाड़ी किराये पर ली थी और वहाँ से हम शिलांग गए। शिलांग में हमने एक होटल में 2 रातों के लिए कमरे बुक किये थे। पहले ही दिन हम वहाँ के शानदार पहाड़ियों के बीच से गुज़रते हुए काफ़ी सारे झरने और गुफायें देखीं। इन जगहों में से जो जगह मुझे सबसे ज्यादा पसंद आई वो थी मॉलीन्नोंग।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ साल पहले स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। इस मिशन का बहुत व्यापक असर देश में देखने को मिला। परंतु उस समय भी देश में एक ऐसी जगह थी, जो स्वच्छता की मिसाल पेश करता है। इस गाँव का नाम मॉलीन्नोंग है, जो मेघालय की ईस्ट खासी हिल्स में स्थित है। मॉलीन्नोंग को एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव माना जाता है। इस गाँव को 'स्वयं भगवान का बगीचा' भी माना जाता है। यह गाँव शिलांग से क़रीब 100 कि.मी. दूर और बांग्लादेश की सीमा के पास है। इस गाँव के अंदर प्रवेश करने के लिए एक टिकट खरीदनी पड़ती है, जो काफ़ी सस्ती है।

क्या चीज़ इस जगह को इतनी खास बनाती है?

1. बेशक यहाँ की सफाई और स्वच्छता : यहाँ के हर घर में शौचालय है जिसको लोग बहुत साफ रखते हैं। यहाँ जगह जगह पर बंबू से बने कूड़ेदान हैं, जहाँ सारा कचरा फेंका जाता है। प्लास्टिक की थैली एवं धूम्रपान यहाँ निषेध है और इसका प्रयोग किया जाए तो उस व्यक्ति को बड़ी रक़म जुर्माना में देनी पड़ती है। यहाँ के लोग अपना खाद इन्हीं कूड़ों को इकट्ठा करके बनाते हैं। लोग खुद रास्ते साफ़ करते हैं और अपने घर के आस पास बहुत सारे पेड़ लागते हैं।

2. स्थानीय आदिवासी : यहाँ रहने वाले अधिकतर लोग खासी समुदाय के हैं। यहाँ का मातृवंशीय समाज बहुत गौर करने वाली बात है। खासी लोगों की परम्परा के अनुसार मावल्यान्नांग में सम्पत्ति और धन दौलत माँ अपनी सबसे बड़ी पुत्री को देती है और वह अपनी माँ का उपनाम आगे बढ़ाती है। यह साबित करता है कि महिला सशक्तिकरण संभव है।

3. खाना : आप शाकाहारी हों या मांसाहारी, आपको यहाँ खाने के लिए बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार मिलेगा।



यहाँ के लोग व्यवस्थित रूप से उगाई गई सब्जियाँ और फल खाते हैं और घर में पाले गए पक्षियों और जानवरों का ही सेवन करते हैं। यहाँ के पकवान मूल रूप से बम्बू में पकाई जाती है, जो इसके स्वाद को और निखार देती है।

4. लिविंग रुट ब्रिज : यह यहाँ का काफ़ी प्रसिद्ध स्थान है। जिसको यूनेस्को ने विश्व विरासत स्थल का खिताब दिया है। यहाँ काफ़ी सारे जीवित पुल हैं पर इनमें से एक पुल जो सबसे प्रसिद्ध है वो लगभग 1000 साल पुराना है और यहाँ के लोग उसका बहुत ही ध्यान रखते हैं और समय-समय पर इसकी सफाई भी करते हैं।

5. घूमने के और स्थान : मेघालय अपने घने बादलों, नदियों, झारनों, गुफाओं, चाय के बागान आदि से मन मोह लेने वाले दृश्यों के बजह से प्रसिद्ध है। परंतु एक ऐसी जगह थी जिसने मेरा मन मोह लिया था और ये दृश्य आज भी मेरे मन मे बसी है। यह जगह है डॉकी नदी जो अपने शीशे जैसे साफ़ पानी के लिए जानी जाती है। आप यहाँ लगभग 12 फुट की गहरायी तक साफ़ देख सकते हैं और यह नदी भारत और बांग्लादेश को विभाजित करती है। हमनें यहाँ नाव की सवारी की, पानी में उतरे और डुबकी भी लगायी और हमने बांग्लादेश के फल विक्रेता से बैर भी खरीदे।

इस पूरे यात्रा में हमें बहुत अच्छे लोग मिले जिन्होंने हमारी बहुत सहायता की और यहाँ के स्थानीय लोग भी बहुत अच्छे हैं जिनकी हमसे अच्छी दोस्ती भी हो गयी थी। इस तरह यह यात्रा मेरे लिए यादगार रही।

पुत्री – श्री चंद्र मोहन महान्त
सहायक महाप्रबंधक (मा.सं.वि)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र, अनुगुण्ठ



कोरोना के प्रभाव

अंजना मुंद्रा

इस वक्त पूरी दुनिया कोरोना महामारी से जंग कर रही है और इस महामारी ने हम हर एक के जीवन को प्रभावित किया है। सड़के खाली पड़ी है, कारोबार ठप है, और गरीबों के लिए तो यह महामारी एक अभिशाप बनकर उभरी है। हर तरफ तबाही, मृत्यु के उदाहरण हमारे सामने अखबार, न्यूज़ चैनल, सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से मौजूद है। हम में से कई लोगों ने लॉकडाउन, सामाजिक दूरी, आईसोलेशन, क्रान्तिकारी जैसे शब्दों को पहली बार सुना है और इसकी परिभाषा समझ आई है। अब जबकि दुनिया भर के देश इस महामारी के इलाज के लिए वैक्सिनेशन ढूँढ़ रहे हैं, आम आदमी कोरोना वायरस के साथ जीना सीख रहे हैं।

इन सब नेगेटिव न्यूज़ के बीच कुछ अच्छी खबर भी आ रही है जैसे कि पंजाब से, बिहार से हिमालय की चोटियाँ दिख रही हैं, वेनिस शहर के बीच बहती नदियों का पानी इतना साफ हो गया है की मछलियाँ दिखाई दे रही हैं, हवा में ताजगी लौट आई है, हम अपने परिवार के साथ मिलकर अपना समय बिता रहे हैं, नए शौक सीख रहे हैं, खर्च सोच समझकर कर रहे हैं।

ऐवेन्जर्स मूँवी में थानोस ने सही कहा है की इस जगत के संसाधन सीमित हैं और अगर हम अपने आप को नहीं बदलते तो यह सृष्टि खुद ब खुद अपने लिए रास्ता ढूँढ़ लेती है। यह बात तो स्पष्ट है की इकॉनमी और पर्यावरण एक दूसरे से व्युक्तमानुपाती है।

कारखानों के बंद होने से, निजी और सार्वजनिक गाड़ियों के कम चलने से हवा में प्रदूषण बहुत कम हो गया है। नाइट्रोजन डाइऑक्साइड जो की वायु प्रदूषण का मुख्य प्रदूषक है, उसकी हवा में उसकी मात्रा काफी कम हो गयी है जिससे की साफ हवा हमें मिल रही है। इसके साथ PM 2.5 (पर्टिकुलते मैटर) जो की मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए

सबसे ज्यादा हानिकारक वायु प्रदूषक है, उसके मात्रा में भी काफी गिरावट आई है लॉकडाउन के कारण। डबल्यूएचओ के एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में लगभग चार करोड़ लोग PM 2.5 के दुष्प्रभावों से पीड़ित हैं। स्टनफोर्ड युनिवर्सिटी ने हाल में अध्ययन किया है जिसमें चीन के एक शहर में लॉकडाउन के दौरान PM 2.5 मात्रा में आई कमी के कारण 77 हजार लोगों की जान बची है।

सिर्फ वायु प्रदूषण ही नहीं, जल प्रदूषण की हालत में भी इस लॉकडाउन के दौरान काफी सुधार आया है। कारखानों के बंद होने से औद्योगिक कचरे जो की हमारी नदियों में बहाये जाते हैं उनकी मात्रा में काफी गिरावट आई है। यमुना नदी का पानी इतना साफ बहुत सालों में नहीं दिखा है। पानी में रहने वाले जीव जन्तुओं के लिए भी लॉकडाउन एक आशीर्वाद बनकर आया है। जेनेटिक डॉल्फिन कितने सालों बाद कोलकाता के तटीय किनारों पर देखी गयी हैं। मछलियों के तादात में भी उन्नति हुई है। और इसके साथ पूरी के तट पर ओलइव रिडले कछुए फिर दिखाये दे रहे हैं।

इसके साथ साथ जंगलों में रहने वाले जानवरों को भी राहत मिली है क्योंकि जंगल में पेड़ों की कटाई नहीं हो रही है। बहुत सारे व्हात्सप्प पर फॉरवर्ड आए हैं की जानवर शहरों में आ रहे हैं क्योंकि सहर सुनसान पड़े हैं। लॉकडाउन के कारण हम अपने जंगल और जीवों के प्रति और सजग हुए हैं और हम सबके मन में छाल तो जरूर आया है कि अपने आसपास होने वाले घटनाओं के लिए हम भी जिम्मेदार हैं और हम ही सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

परिवहन सैक्टर के बंद होने से, गाड़ियों और हवाई जहाज के कम चलने से CO₂ साव काफी कम हो गया है। काफी समय से हम सुनते आ रहे हैं और महसूस भी किया है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण हमारे आसपास के वातावरण में काफी बदलाव आया है। लेकिन यह लॉकडाउन के कारण

हम साफ हवा ले पा रहे हैं, तापमान से वो गर्मी चली गयी है, समय पर बारिश हो रही है। और कहीं न कहीं इस बदलाव से खुश हैं। एक रिपोर्ट की बात मानें तो CO₂ उत्सर्जन में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार ५% से ज्यादा की कमी आई है। इस रिपोर्ट के अनुसार CO₂ श्राव में गिरावट दर्ज की गयी थी सोवियट संघ के टूटने पर, विश्व युद्ध के समय, ऑइल क्रिसिस, २००८ के वित्तीय संकट, इत्यादि, परंतु इतना प्रभाव नहीं था जितना की कोरोना महामारी के कारण। जिससे साफ हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विश्व के देशों की अर्थव्यवस्था जीवाश्म ईंधन पर बहुत ज्यादा ही निर्भर है- चाहे वह परिवहन सैक्टर हो, मैनुफेक्चुरिंग हो या फिर विद्युत उत्पादन हो। चीन में फ़रवरी और मार्च में लोकडाउन के समय CO₂ स्राव २५% कम हो गया था परंतु लोकडाउन खुलने के बात फिर से CO₂ स्राव अपने पुराने स्तर पर चला गया है।

यहाँ पर एक सवाल उठता है कि क्या यह सारे अच्छे बदलाव कुछ समय के लिए हैं और जब सारे देश धीरे धीरे अपने अर्थव्यवस्था को पुनः ऊपर उठा रहे हैं तो हम दोबारा से इन सारी अच्छे बदलावों के लिए तरसेंगे। अब जबकि हम जॉब लॉस या फिर बेरोजगारी से जूझ रहे हैं, इस चैलेंज को हम एक ऑपर्चुनिटी के रूप में भी देख सकते हैं। सरकार को चाहिए कि उसे नवीकरणीय ऊर्जा या फिर स्थाई ऊर्जा को बढ़ावा देना चाहिए और इसी क्षेत्र में नयी नौकरियां नौकरियाँ चाहिए।

यह सारे बाहरी बदलावों से तो हम खुश हैं ही परंतु जो हम हर-एक के अंदर जो बदलाव आया है वो काफी सरहनीय है। घर के हर एक छोटे बड़े काम परिवार के हर लोग मिलजुल कर रहे हैं। परिवार एक दूसरे के करीब आए हैं और एक साथ मिल कर खाना खा रहे हैं, अपनी बाते साझा कर रहे हैं। जितनी जरूरत है उतना खर्च कर रहे हैं। जो हॉबी हम बहुत टाइम से करना चाहते थे वो अब कर पा रहे हैं। समय को सही तरीके से व्यवस्थित करना सीखा है हमने।

कोरोना महामारी ने हम हरेक को आत्म विश्लेषण करने पर विवश कर दिया है और अभी तक के नतीजों से मैं काफी प्रभावित हूँ। कठिन समय में लोगों के अच्छाई बाहर आई है और इन सबके लिए हम सब धन्यवाद के पात्र हैं।

उप प्रबंधक (सतर्कता)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



बीच में रुकना नहीं है

सुनील पत्ती

बीच में रुकना नहीं है...
हो रही अग्नि परीक्षा,
ज़िंदगी के हर कदम पर।
साथ वाले सिर्फ दर्शक,
चलना तुझको है संभलकर॥

सासें जो तुझको मिली है,
इनमें पूरा कर प्रयोजन।
ये भी तो संभव है आगे,
न कभी पाये मनुज तन॥

आज को कल पर न छोड़े,
बेड़ियाँ जो भी हो तोड़े।
प्रण करे व शेष तन- मन,
लक्ष्य पाने हेतु मोड़े॥

ठान ले जो वक्त सही है,
जो परम है तू वही है।
मंज़िलें तुझको बुलाती,
बीच मैं रुकना नहीं है॥

सहायक प्रबंधक (परियोजना)
निगम कार्यालय
भुवनेश्वर



पहली तस्वीर

मौसमी साहू

मिता आज बहुत खुश है, क्योंकि आज उसको नौकरी का पहला वेतन मिला है। वैसे दो दिन के बाद लगातार चार दिन की छुट्टी है। इसलिए उसको नींद नहीं थी, मन में सिर्फ़ सूची कि, किसके लिए क्या-क्या लेकर जाएगी बस यही बात मन में चल रही थी। जब से उसको नौकरी लगी है तब से छोटा भाई मन्दू अच्छी ब्राण्ड की एक शर्ट और जूते देने के लिए पहले से ही बोल रखा है। पर मन्दू के मन में एक अच्छी मोबाईल पकड़ने की इच्छा थी परन्तु उसने कभी इसे जाहिर नहीं किया। परन्तु मिता ने उसको एक अच्छी मोबाईल सरप्राइज़ में देने के लिए सोचा है। घर के सभी सदस्य के लिए कुछ ना कुछ लेने के लिए ऑफिस से जल्द ही निकल गयी।

जैसे ही मिता छुट्टियों में घर पहुंची तो मन्दू ने उससे बैग छीनकर खोजने लगा कि, उसके लिए क्या आया है? उसके लिए लाये हुए जूते और शर्ट देखकर बहुत खुश हो गया। मन्दू ऐसा करेगा ये बात मिता को पहले से ही पता थी, तो उसने मोबाईल छुपा दी थी और रात को खाना खाने के बाद जब सभी बैठकर बात कर रहे थे तब उसने मन्दू को सरप्राइज़ में मोबाईल उपहार में दिया। मोबाईल देखने के बाद मन्दू की खुशी की सीमा नहीं रही। माँ-बाबा ने मिता को यह कहते हुए डांटा कि, 'इसी तरह तुम इसे बिगाड़ते रहो और अपने श्रम के पैसों को बेकार में इस बदमाश के पीछे उड़ाते रहो।' परन्तु मिता ने उनकी बातों पर ध्यान न दिया मन्दू की खुशी देख कर उसको ज्यादा संतोष मिल रहा था।

मिता ने मन्दू से कहा जाओ जाकर नई शर्ट पहनकर आओ मैं तेरी नई मोबाईल से फोटो खीचूँगी। लेकिन उसकी वेबकूफ़ और अंधविश्वासी माँ ने आज अच्छा दिन नहीं है और कल शनिवार है, तो एक अच्छा दिन देखकर पहनने का सुझाव देने के पश्चात मन्दू ने माँ की बात को टाल नहीं पाया। और सब सोने चले गये।

ऐसे ही छुट्टी खत्म हो गयी पर मन्दू को नई शर्ट और जूते पहनने के लिए समय नहीं मिला। जब वह मिता को छोड़ने

बस स्टैंड आया था तो उसने कहा दीदी जिस दिन तुम आओगी उस दिन मैं नई शर्ट पहन कर तुम्हारे हाथों से खींची हुए पहली तस्वीर लूंगा और उसको अपनी स्टेटस में रखूँगा। और उसपे लिखा रहेगा- "मोबाईल, शर्ट एंड शूज़ गिफ्टेड बाई माई प्यारी मोटी सिस्टर" दोनों के बीच हँसी ठिठोली चलती रही। फिर बस आ जाने के बाद मिता ने मन्दू से विदाई ली।

इतने आगे आ कर भी कहीं ना कहीं हमारे अन्दर कुसंस्कार व अन्धविश्वास अभी भी मौजूद है। जैसे कि मिता की माँ ने एक छोटी सी शर्ट के लिए दिन वार की गिनती की।

बीच बीच में मिता फोन पर मन्दू से बात करते समय उसे नई सर्ट पहन कर फोटो खिंचाने के लिए बार-बार बोल रही थी पर जिद्द में अटल था कि जब दीदी आएगी, तो उसी से अपनी पहली तस्वीर खिंचवाएगा। ऐसे ही खुशी खुशी से दिन बीत रहे थे।

एक दिन फोन आया कि मन्दू का छोटा सा एक्सीडेन्ट हुआ है। यह सुनने के बाद मिता का किसी भी काम में मन नहीं लग रहा था। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद भी उसके परिवार के किसी भी सदस्य से मन्दू के बारे में किसी प्रकार की खबर नहीं मिली। शायद सभी अस्पताल में व्यस्त होंगे सोचकर मिता ने दोबारा अपनी माँ को फोन लगाया कि शायद वह फोन उठा लें, परन्तु कोई उत्तर न मिलने पर उससे घबड़ाहट हो रही थी। उसने किसी रिश्तेदार का नंबर भी नहीं रखा है कि जिससे वह मन्दू के बारे में कुछ जानकारी ले सकेगी।

बाबा ने कहा था एक छोटी सी दुर्घटना हुई है- यह सोचकर मिता अपने मन को शांत कर रही थी। और ऑफिस कामों में मन लगाने के लिए कोशिश कर रही थी पर उसका मन कहाँ, जो लग रहा था। फिर मन ही मन सोचने लगी कि 3 घंटा का ही तो रास्ता है, वह खुद जा कर मन्दू को देख ले, तो उसका मन हल्का हो जाएगा। और अगले दिन ही ऑफिस के लिए निकल आएगी। भाड़े में गाड़ी ले कर निकल पड़ी।

गांव की ओर। मोबाइल चार्ज न होने के कारण रास्ते में ही स्वीच भी ऑफ हो गया था।

घर पहुंची तो मन्टू के नये जूते और गांव के लोगों को देख कर उसको थीड़ी राहत मिली कि 'चलो मन्टू वापस घर आ चुका है'। इसलिए इतनी भीड़ है शायद उसे देखने आये होंगे। उसके घर से गांव सिर्फ 2 किलोमीटर की दूरी पर है। किसी को कुछ होने की खबर मिलने पर लोगों का स्रोत छुट्टा है। उसके बाबा के मित्रतापूर्ण गुण के कारण गांव में उनकी ख्याति है। पर उन लोगों के साथ परिचित नहीं होने के कारण वह सिर्फ नमस्ते कहकर घर के अन्दर चल दी।

बाहर मन्टू के नये जूते देखकर मिता चिल्ला-चिल्ला कर घर के अन्दर गयी और कहने लगी- "क्या रे किसे इंप्रेस करने के लिए नये जूते पहन कर गया था कि गाड़ी की टक्कर लगा दी, जान ही नहीं पाया।" मां-बाबा ठीक ही कह रहे थे मैं ही तुझे बिगाड़ रही हूँ।" लेकिन अन्दर जा कर देखा कि मन्टू नई शर्ट पहन कर बिस्तर में शांति से सोया है, बाबा उसके पैर के नीचे एक लकड़ी की तरह बैठे हुए हैं। मां मानो जैसे पूरी तरह से पागल हो चुकी थी। गांव के लोगों की भीड़ थी। मिता को देखते ही सब कहने लगे कि, मिता आ गयी और देर मत करो नहीं तो क्रियाकर्म शुरू करने में देर हो जाएगी। यह सुनने के बाद मिता के लिए कुछ असमझ ही नहीं था, कुछ और शब्द की आवश्यकता नहीं थी कि मन्टू और इस दुनिया में नहीं रहा। इसलिए उसे नई शर्ट पहना गया जैसे कि प्रथा के अनुसार किसी मृत इन्सान को नए कपड़े के साथ विदा किया जाता है।

ये सब देखकर मिता से सहा नहीं गया। आँखों में आंसू रुक नहीं रहे थे। खुद को संभालेगी या फिर अपनी माँ, बाबा, घर परिवार को संभालेगी। ऐसा लग रहा था मानो जैसे पहाड़ टूट पड़ा है। सब कुछ अटक सा गया था। पूरी दुनियाँ में जैसे अंधेरा छा गया था। मन ही मन सोच रही थी काश माँ ने उस दिन मना न किया होता कि आज अच्छा दिन नहीं है, कल शनिवार को नए कपड़े नहीं पहनते तो शायद उसी दिन ही मन्टू की ख्वाहिश पूरी हो जाती। समय की प्रतीक्षा में वह खुद ही अकाल वियोग में चल गया।

वरिष्ठ डेटा प्रविष्टि परिचालक
निगम कार्यालय
भुवनेश्वर



प्रश्न चिह्न

शुभा सिंहा

सुबह टी.वी. खोलो
सुनने को समाचार
पर देखने को मिलता है
सिर्फ हाहाकार
बीमारी से लगा
लाशों का अंबार
सीमा पर मरते जवानों के समाचार
औरतों की लुट्टी आबरू
गाड़ियों की रफ्तार से
कुचले जीवन
त्रस्त दिखता है सारा संसार
क्यों हो रहा बुराइयों का प्रसार
क्यों हैं हम इतने लाचार
आखिर किस तरह इन पर लगेगी लगाम
इस प्रश्न चिह्न के बीच
फँसा एक आम इंसान ?

शिक्षिका
डीपीएस, दामनजोड़ी



धुस्का

वीणा कुमारी

परिचय: यह झारखंड का सुप्रसिद्ध पारम्परिक पकवान है। जो वहाँ लगभग हर त्योहार पर बनाया जाता है।

सामग्री: अरवा चावल 1 कप (200 ग्राम), चना दाल आधा कप (100 ग्राम), उड़द दाल एक छौथाई कप (50 ग्राम), तलने के लिये तेल, जीरा 1 बड़ा चम्मच, नमक।

विधि- सबसे पहले चावल तथा दोनों दालों को पानी में 4 से 5 घन्टे फूलने के लिये रख दें। इसके बाद इनको मिक्सी में डाल कर घोल बनाए। घोल इतना गढ़ा होना चाहिए कि वो तेल में आसानी से तल जाए। अर्थात् ना ज्यादा गढ़ा और ना ही ज्यादा पतला होना चाहिए। अब घोल में जीरा डाल दे तथा नमक स्वादनुसार डाल दे। इधर एक कड़ाई में तेल गर्म होने के लिए रख दें। जब तेल अच्छी तरह



गर्म हो जाए तो उसमे कर्चुल की मदद से घोल को डालें। जब धुस्का सुनहले रँग का हो जाए तो उसे पलटकर दुसरी तरफ से भी सुनहला होने तक पकाएं। अब उसे एक प्लेट में निकल कर आलू की पतली रसदार सब्जी तथा धनिया की चटनी के साथ गरमा गरम परोसे।

माँ - श्री अखिल कुमार (सहायक प्रबंधक)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
अनुगुल



सहजन रस (सब्जी) (सरजाना छुई रसो – ओडिया)

वी. अनुराधा

सहजन के बारे में तो हम सभी जानते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम मोरिंगा ओलिफेरा (Moringa Oleifera) है। सहजन की फली की सब्जी लगभग हर घर में बनती है। खाने में तो इसका स्वाद सबको खूब भाता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस फली और इसके पेड़ के भी स्वास्थ्य के लिए कई फायदे हैं। इनमें प्रोटीन, अमीनो एसिड, बीटा कैरटीन और विभिन्न फाईनॉलिक होते हैं।

सामग्री: 4 – सहजन (3 इंच के करीब काट लें), 1 बड़ा चम्मच सरसों, आधा नारियल छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें, 100 ग्राम तिल, 5-6 हरी मिर्च, 100 ग्राम चावल चुना, 1 छोटा चम्मच मुंग दाल, 1 चुटकी हींग और करी पत्ता, नमक स्वादनुसार, 2 चम्मच चीनी, 1/2 चम्मच हल्दी, 2 चम्मच तेल, 1 छोटा चम्मच ईमली का रस

विधि: सबसे पहले कटा सहजन को धो कर एक कड़ाही में पानी मिला कर गैस पर बैठाए। फिर 1/2 चम्मच हल्दी और नमक स्वादनुसार उसमें डाल दें फिर पकाएँ। जब सहजन नरम हो जाएं तो गैस को बंद करके पानी को अलग और सहजन को अलग कर दें। पानी को न फेंकें।



एक चटनी जार में नारियल के टुकड़े, तिल, हरी मिर्च, सरसों को एक साथ थोड़ा पानी के साथ चिकनी पेस्ट में पीसिये। अब कड़ाई में तेल लेकर मुंग दाल, हींग और करी पत्ता डाल कर भुनना फिर पिसी हुई पेस्ट को डाल कर भुनें। एक कटोरे में चावल चुना को पानी में मिलाकर कड़ाही में डाल देना साथ ईमली का रस और चीनी। जब मिश्रण पक जाए तो सहजन और पानी को मिला देना। थोड़ा पकने के बाद गैस बंद कर दें।

सहजन रस सब्जी तैयार।

कार्यपालक सहायक (प्रशासन)
पत्तन सुविधाएँ, विशाखपट्टनम



'राष्ट्रीय आतंकवाद विरोध दिवस' के अवसर पर शपथ ग्रहण करते हुए हमारे अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक तथा निदेशक-गण



'राष्ट्रीय योग दिवस' के अवसर पर हमारे अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय तथा निदेशक-गण परिवार के साथ योगाभ्यास करते हुए



'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर निगम कार्यालय में विख्यात लेखिका श्रीमती मनोरमा महापात्र तथा मशहूर शिक्षाविद् श्रीमती नादिया मोघवेलपोर को सम्मानित करती हुई नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर वृक्षारोपण करते हुए अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय



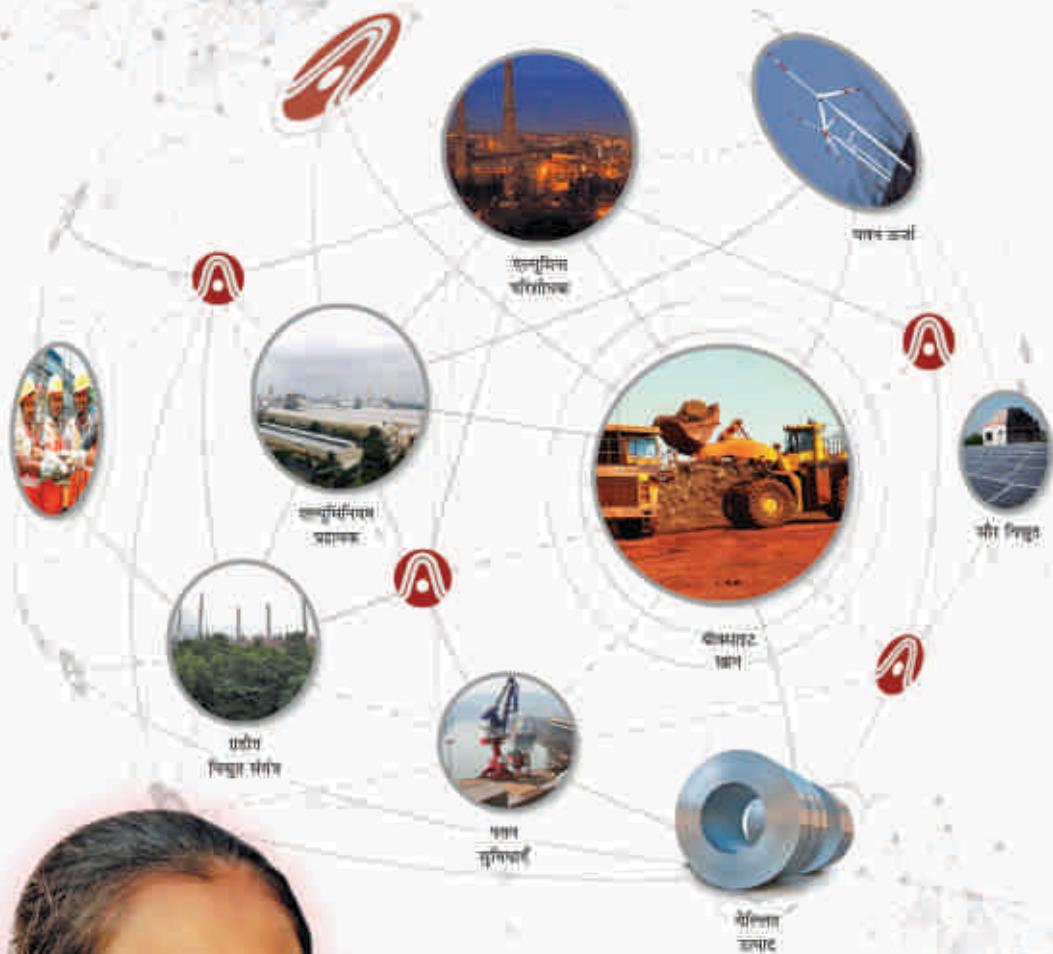
'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर नालको महिला समिति द्वारा खान तथा परिशोधन संकुल में पद्मश्री श्रीमती कमला पुजारी का सम्मान



नए उत्पाद एवं 6051 मिश्रधातु बिलेट की प्रथम खेप का प्रेषण



भारतीय सार वैश्विक प्रसार



पश्चिम में यूहतप एकोकृत एन्ट्रूमिनिंग और एन्ट्रूमिनिंग संकुलों में से एक, नाल्को के प्रधान वर्कसाइट थाने, एन्ट्रूमिनिंग वर्कसाइट, एन्ट्रूमिनिंग प्रदाता, विद्युत गृहन से लेकर अनुप्राप्त उत्पादों तक जो सामग्री गृहन नुस्खाओं को पार करने वाले नाल्को हैं।

- ▲ विद्युत में एन्ट्रूमिनिंग का नियमजाप उत्पाद का उत्पादक
- ▲ विद्युत में एन्ट्रूमिनिंग का नियमजाप उत्पाद का उत्पादक
- ▲ गोसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अवैन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम